# अहले सुन्नत् वल्जमाअत् का अक़ीदा

लेखक

शेख मोहम्मद बिन स्वालेह अल्उसैमीन (रहि)

अनुवादक

अबू फैसल् /आबिद बिन् सनाउल्लाह अल्मदनी

مكتب
دعوة وتوعية الجاليات بعنيزة
هاتف ٠٦٣٦٤٤٥٠٦ ص.ب ٨٠٨

# अहले सुन्नत् वल्‌जमाअ़त्‌ का अक़ीदा

लेखक

शैख मोहम्मद बिन स्वालेह अल्‌उसैमीन (रहि)

अनुवादक

अबू फैसल् /आबिद बिन् सनाउल्लाह
अल्‌मदनी

प्रकाशक

इस्लामिक सेन्टर उनेज़ा
पेस्ट बाक्स न०–८०८–फोन न०–
०६/३६४४५०६फाक्स न०–०६/३६१३७९३

ح مكتب توعية الجاليات بعنيزة ، ١٤٢٤هـ

*فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر*

العثيمين ، محمد بن صالح
عقيدة أهل السنة والجماعة / محمد بن صالح العثيمين
.- عنيزة ، ١٤٢٤هـ
٨٠ ص ؛ ١٢ × ١٧ سم
ردمك : ٣ - ٢٢ - ٨٥٩ - ٩٩٦٠
(النص باللغة الهندية)
١ - العقيدة الإسلامية أ- العنوان
ديوي ٢٤٠ ١٤٢٤/٣٧١٩

رقم الايداع ١٤٢٤/٣٧١٩
ردمك : ٣-٢٢-٨٥٩-٩٩٦٠
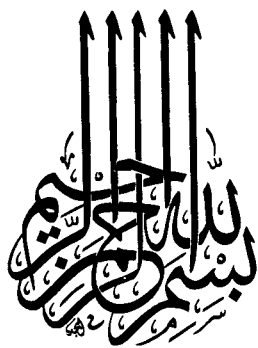
# प्रस्तावना

الحمد لله رب العالمين والعاقبة للمتقين ولاعدوان الاعلي الظالمين واشهد ان لااله الاالله وحده لاشريک له الملک الحق المبين واشهد ان محمداً عبده ورسوله خاتم النبيين وامام المتقين صلي الله عليه وعلي آله واصحابه ومن تبعهم باحسان الي يوم الدين . اما بعد :

अल्लाह तआला ने अपने रसूल हजरत मुहम्मद ﷺ को हिदायत और दीने ह़क़ के साथ तमाम संसार वालों के लिए रह़मत् , अमल करने वालों के लिए नमूना और लोगों पर प्रमाण बनाकर भेजा। आप ﷺ की ज़ाते गिरामी और आप ﷺ पर नाज़िल की गई किताब तथा हिक्मत् के माध्यम से अल्लाह तआला ने वह सब कुछ बयान कर दिया जिस में बन्दों के लिए भलाई और उन के धार्मिक और संसारिक् कामों में मज़बूती है। जैसे सह़ीह़ अक़ीदे , दुरुस्त कर्म , बेहतरीन अख़लाक़ और उच्च स्तर के आदाब आदि।

और रसूलुल्लाह ﷺ अपनी उम्मत को रौशन् तथा साफ रासता पर छोड़कर गये हैं। जिस की रात भी दिन की तरह रौशन् है। केवल पथभ्रष्ट आदमी ही उस रास्ते से भटक सकता है।

फिर आप ﷺ की उम्मत के वह लोग इस रासते पर चलते रहे जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल की दावत् पर लब्बैक कहा , वह सह़ाबये किराम , ताबईने इजाम की तमाम मख़लूक़ में से सब से अच्छी जमाअत् थी और वह लोग जिन्हों ने बेहतर तरीक़े से उन की पैरवी की , शरीअत् को लेकर उठे , सुन्नते रसूल को मज़बूती से थामे रखा , अक़ीदा , इबादात और अख़लाक़ व आदाब में उसे पूरी तरह अपनाया , और यही हजरात वह मुबारक जमाअत् क़रार पाये जो हमेशा से ह़क़् पर क़ायम् है। उन की मुख़ालफत् करने वाले और उन्हें रुस्वा करने वाले उन्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते यहाँ तक कि क़यामत बरपा होजायेगी और वह उसी शरीअत्

पर रवाँ दवाँ होंगे । और हम भी – अल्हम्दुलिल्लाह – उन्हीं के नक़्शे क़दम पर चल् रहे हैं और उन्हीं के कार्यप्रणाली को – जिस की कुरआन तथा सुन्नते रसूलुल्लाह से ताईद होती है – अपनाये हुये हैं । हम इस नेमत् के शुक्रिया के रुप में और यह बयान करने के लिए इस का वर्णन कर रहे हैं कि हर मोमिन को इस तरीक़े पर कारबन्द रहना जरूरी है ।

और हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें और हमारे मुसलमान भाइयों को दुनिया तथा आखिरत में कलमये तैयबा पर साबित क़दम रखे और हमें अपनी रह्मत् से नवाज़े , निस्सन्देह वह बहुत अधिक प्रदान करने वाला है ।

मैं ने इस विषय की महत्व और अक़ीदे के बारे में लोगों की विभिन्न विचार धारायें और विभिन्न इच्छाओं और मतभेद के कारण बेहतर समझा कि अहले सुन्नत् वल्जमाअत् का अक़ीदा जिस पर हम अमल् पैरा हैं संक्षिप्त रूप से लिपिबद्ध करूँ और वह अक़ीदा अल्लाह रब्बुल् इज्जत् , उस के फरिश्तों , उस की किताबों , उस के रसूलों , क़यामत् के दिन और तक़दीर की भलाई , बुराई पर ईमान लाने का नाम है ।

मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह इस काम को ख़ालिस् अपनी ज़ात के लिए करने की तौफीक़् बख़्शे , इसे पसन्दीदा आमाल के मुताबिक़् बनाये और अपने बन्दों के लिए लाभदायक करे । आमीन या रब्बल् आलमीन !

मुह़म्मद बिन स्वालेह़ अल्उसैमीन

उनेज़ा , अल्क़सीम

३० शव्वाल १४०४ हि.

# कुछ इस किताब के विषय में

الحمد لله وحده والصلاة والسلام علي من لا نبي بعده وعلي

آله وصحبه . اما بعد :

मुझे अक़ीदे की इस सम्माननीय तथा संक्षिप्त किताब के विषय में जानकारी प्राप्त हुई जिसे हमारे भाई फज़ीलतुश्शैख़ अल्लामा मुहम्मद बिन् स्वलेह अल्उसैमीन ने सङ्कलित किया है। मैं ने पूरी किताब पढ़वाकर सुना तो इसे तौहीद बारी तआला और उस के नामों तथा विशेषताओं, आसमानी किताबों, अल्लाह के रसूलों, आख़िरत के दिन और तक़्दीर की भलाई बुराई पर ईमान के विषय में अहले सुन्नत वल्जमाअत् के अक़ीदों का बड़ा शानदार संग्रह पाया। निस्सन्देह लेखक ने बड़े अच्छे ढङ्ग से इसे जमा किया और लाभदायक बनाया है। इस में वह तमाम मसाइल् जमा कर दिये हैं जो एक विद्यार्थी और आम मुसलमानों को अल्लाह की ज़ात, उस के फरिश्तों, किताबों, रसूलों, आख़िरत के दिन और तक़्दीर की भलाई तथा बुराई पर ईमान के विषय में आवश्यकता होती है और इस के साथ कुछ ऐसी अत्यन्त लाभदायक बातें भी बयान कर दी हैं जिन का अक़ीदे से सम्बन्ध है और वह अक़ीदे की बड़ी बड़ी किताबों में भी नहीं मिलतीं। अल्लाह तआला उन्हें अच्छे प्रतिफल से सम्मानित करे और अधिक ज्ञान तथा विद्या और मागदर्शन नसीब फरमाये, इस किताब को और उन की तमाम किताबों को हितकर तथा लाभदायक बनाये।
अल्लाह लेखक महोदय, हमें और हमारे तमाम भाइयों को सत्य मार्ग की ओर मर्गदर्शन करने वाले मार्गदर्शन पाने वाले लागों में सम्मिलित फरमाये जो कुरआन तथा सुन्नत पर अमल करने की दावत देते हैं।
और दरूद व सलाम नाज़िल हो हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पर और आप की औलाद पर और आप के साथियों पर।

अबदुल् अज़ीज बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़
रियाद - सऊदी अरब

# अध्याय – १

## हमारा अक़ीदा

हम ईमान रखते हैं अल्लाह तआला पर , उस के फरिश्तों पर , उस की किताबों पर , उस के रसूलों पर , आख़िरत् के दिन पर और इस बात पर भी कि अच्छी , बुरी तक़दीर सब अल्लाह की तरफ से है ।

इस लिए हम अल्लाह तआला की रुबूबीयत् पर ईमान रखते हैं । यानी सिर्फ वही पालने वाला , पैदा करने वाला , हर चीज़ का मालिक और तमाम कामों की तद्बीर करने वाला है ।

और हम अल्लाह तआला की उलूहीयत् (ईश्वरत्तव) पर ईमान लाते हैं । यानी सिर्फ वही सच्चा मअ्बूद है । उस के सिवा सभी मअ्बूद झूठे , बातिल् और असत्य हैं । और अल्लाह तआला के नामों और सिफात ( गुण विशेषताओं ) पर भी हमारा ईमान है । यानी अच्छे से अच्छे नाम सब उसी के लिए हैं और हम उस की वह्दानियत् (एकत्व) पर इस प्रकार ईमान रखते हैं कि उस का कोई शरीक नहीं न तो उस की रुबूबीयत् में और न उस की उलूहीयत् में और न ही उस के नामों तथा सिफात में ।

अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا(٦٥) ﴾ (مريم ٦٥)

वह आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उन दोनों के बीच है सब का पालनहार है । इस लिए केवल उसी की इबादत करो

और उसी की इबादत पर जमे रहो । क्या तुम कोई उस का हम्नाम (समनाम) जानते हो ? । (सूरा मर्यम् ६५)

## और हमारा ईमान है कि :–

﴿ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ(٢٥٥) ﴾ ( البقرة ٢٥٥ )

अर्थ :– अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद ( पूजनीय ) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला ( चिरञ्जीवी ) है , सबको क़ायम् रख्ने वाला है । उसको न ऊँघ आती है न नींद आसमान और जमीन की सब चीज़ें उसी की हैं । कोन है जो उस के पास किसी की सिफारिश् (अनुसन्शा ) करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर । वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है , और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम ) सक्ते मगर जितना चाहे अल्लाह , और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुस्अत् ( घेरे ) में ले रक्खा है । और उन दोनों की हिफ़ाजत् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अज़्मत् वाला है । ( सूरा बक़रा २५५ )

## और हमारा ईमान है कि :–

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَانُ الرَّحِيمُ(٢٢) هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ

الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ(٢٣)هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (٢٤)

(الحشر ٢٢٠-٠٢٤)

वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई सच्चा और ह़क़ीक़ी मअ़बूद नहीं । पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला है । वह बड़ा मेहरबान नेहायत् रह़म् करने वाला है । वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई दूसरा इबादत् के लायक़् नहीं । वही हक़ीक़ी बादशाह है , हर ऐब से पाक है , सलामती देने वाला , अमन् देने वाला , निगह्बान , सर्वशक्तिमान , सर्वश्रेष्ठ और बड़ाई वाला है । अल्लाह तआला की ज़ात लोगों के शिर्क से पाक है । वही अल्लाह तमाम मख़्लूक़ात का ख़ालिक़् और सृष्टिकर्ता है , सब की सूरतें बनाता है , उस के लिए अच्छे से अच्छे नाम हैं । आसमानों और ज़मीन में जितनी भी चीज़ें हैं सब उस की तस्बीह बयान करती हैं और वह ग़ालिब् ह़िक्मत् वाला है ।
( सूरा ह़शर २२ , २३ , २४ )

﴿لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورَ(٤٩)أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَقِيمًا إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ(٥٠) ﴾ (الشورى ٠٤٩-٠٥٠)

आसामनों तथा ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है । वह जो चाहता है पैदा करता है , जिसे चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे प्रदान करता है या उन को बेटे और

बेटियाँ दोनों देता है और जिसे चहता है बेअवलाद (निसन्तान ) रखता है । निस्सन्देह वह जानने वाला , कुद्रत् वाला है । ( सूरा शूरा ४९, ५०)

और हमारा इस पर भी ईमान है कि :-

﴿ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ البَصِيرُ(١١)لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ(١٢) ﴾

(الشورى ١١-١٢٠)

उस के मिस्ल कोई चीज़ नहीं और वह खूब देखने वाला और सुनने वाला है । आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ उसी के पास हैं । वह जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है और जिस के लिए चाहता है तङ्ग कर देता है । बेशक् वह हर चीच् के विषय में जानता है । ( सूरा शूरा ११ , १२ )

और हमारा इस पर भी ईमान है कि :-

﴿ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ(٦) ﴾ (هود ٦٠٠)

ज़मीन पर कोई भी चलने फिरने वाला नहीं मगर उस की रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है और वह जहाँ रहता सहता है उसे भी जानता है और जहाँ सौंपा जाता है ( अर्थात जहाँ मरने के बाद दफन् किया जाता है ) उसे भी , यह सब कुछ रौशन् किताब ( लौहे महफूज़ ) में लिखा हुआ है । ( सूरा हूद ६ )

और हमारा इस पर भी ईमान है कि :-

﴿ وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ(٥٩) ﴾ ( الأنعام ٥٩ . )

और उस के पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं जिन को उस के सिवा कोई नहीं जानता और उसे ख़ुश्की और समुन्द्र (जल , थल ) की तमाम चीज़ों के विषय में ज्ञान है और कोई पत्ता नहीं झड़ता मगर वह उस को जानता है और ज़मीन के अंधेरों में कोई दाना और कोई हरी और सूखी चीज़ नहीं मगर वह रौशन् किताब में लिखी हुई है । ( सूरा अल्अन्आम ५९ )

और हमारा ईमान है कि :–

﴿ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ(٣٤) ﴾ ( لقمان ٣٤ . )

बेशक् अल्लाह ही के पास क़यामत का इलम ( ज्ञान ) है । और वही पानी बरसाता है और जो कुछ गर्भवती महिला या अन्य प्राणी के गर्भाशय में है उस की ह़क़ीक़त् ( वास्तविकता ) को वही जानता है और कोई आदमी नहीं जानता कि कल् वह क्या काम करेगा और कोई प्राणी नहीं जानता कि किस जगह में उसे मौत आएगी । ( सूरा लुक़्मान ३४ )

और हमारा इस पर भी ईमान है कि :–

अल्लाह तआला जो चाहे , जब चाहे और जैसे चाहे बात करता है ।

﴿ وَكَلَّمَ ٱللَّهُ مُوسَىٰ تَكۡلِيمًا ﴾ (النساء ١٦٤)

और अल्लाह तआला ने मूसा से कलाम किया । ( सूरा निसा १६४ )

﴿ وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقَٰتِنَا وَكَلَّمَهُۥ رَبُّهُۥ ﴾ (الأعراف ١٤٣)

और जब मूसा अलैहिस्सलाम हमारे निर्धारित समय पर ( तूर नामक पहाड़ी ) पर आए और उन के रब् ने उन से बात की । ( अल्आराफ १४३ )

﴿ وَنَٰدَيۡنَٰهُ مِن جَانِبِ ٱلطُّورِ ٱلۡأَيۡمَنِ وَقَرَّبۡنَٰهُ نَجِيًّا ﴾ (مريم ٥٢)

और हम ने उन को तूर पहाड़ी की दायीं ओर से पुकारा और सरगोशी करने के लिए क़रीब बुलाया । ( सूरा मरयम् ५२ )

## और हमारा इस पर भी ईमान है कि :–

﴿ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا(١٠٩) ﴾ (الكهف ١٠٩)

अगर समुन्द्र मेरे रब् की बातों के लिखने के लिए सियाही हो तो मेरे रब् की बातें पूर्ण होने से पहले ही समुन्द्र की सियाही समाप्त हो जाएगी और यदि इसी प्रकार अन्य समुन्द्र ले आएँ । ( सूरा अल्कहफ् १०९ )

﴿ وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ(٢٧) ﴾ (لقمان ٢٧)

अगर ऐसा हो कि ज़मीन में जितने पेड़ हैं सब के सब क़लम् हों और समुन्द्र का तमाम पानी सियाही हो , उस के बाद भी सात समुन्द्र और सियाही हो जाएँ तब भी अल्लाह की बातें नहीं पूरी हो सकतीं । बे शक् अल्लाह ग़ालिब् हिक्मत् वाला है । ( सूरा लुक़मान २७ )

## और हमारा ईमान है कि :–

अल्लाह के कलिमात ( बातें ) ख़बरों में सच्चाई , अह्काम ( आदेश ) में न्याय तथा इन्साफ और बातों में सुन्दरता एवं हुस्न व जमाल के आधार से सम्पूर्ण कलिमात ( बातों ) से उत्तम तथा परिपूर्ण हैं ।

अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ(١١٥) ﴾ (الأنعام ١١٥)

और तुम्हारे रब् की बातें सच्चाई और इन्साफ में पूरी हैं । ( सूरा अल्अन्आम ११५ )

﴿ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ ٱللَّهِ حَدِيثًا ﴿٨٧﴾ ﴾ (النساء ٨٧)

और अल्लाह से बढ़कर सच्ची बात कहने वाला कौन है ? । ( सूरा निसा ८७ )

और हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि कुरआने करीम अल्लाह का कलाम है। निस्सन्देह उस ने वह कलाम किया है और हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम पर इल्क़ा किया। ( अर्थात दिल में डाल दिया ) फिर हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने उसे रसूलुल्लाह ﷺ के पवित्र दिल् में उतारा।

अल्लाह तआला फरमाते हैं :-

﴿ قُلْ نَزَّلَهُۥ رُوحُ ٱلْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِٱلْحَقِّ ﴿١٠٢﴾ ﴾ (النحل ١٠٢)

कह दीजिए इस को रूहुल् कुदुस् ( जिब्रील अलैहिस्सलाम ) तुम्हारे रब् की तरफ् से सच्चाई के साथ लेकर नाज़िल् हुए हैं। ( सूरा नहल १०२ )

﴿ وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ(١٩٢)نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ(١٩٣)عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ(١٩٤)بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ(١٩٥) ﴾

(الشعراء ١٩٢-١٩٥)

और यह कुरआन अल्लाह रब्बुल् आलमीन की ओर से नाज़िल् किया हुआ है। इसे लेकर हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए फिर उस ने तुम्हारे दिल् में डाला। ताकि तुम लोगों को डराने वालों में से हो जाओ। और यह कुरआन फसीह् व बलीग़ तथा साफ अरबी ज़बान में है। ( सूरा शोरा १९२ – १९५ )

## और हमारा ईमान है कि :-

अल्लाह तआला अपनी ज़ात व सिफात में मख़्लूक़ से बुलन्द व बाला है। अल्लाह तआला खुद अपने बारे में फरमाते हैं।

﴿ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ ﴾ (البقرة ٢٥٥)

वह बुलन्द व बाला तथा अज़्मत् वाला है। ( सूरा बक़रा २५५)

﴿ وَهُوَ ٱلْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِۦ ۚ وَهُوَ ٱلْحَكِيمُ ٱلْخَبِيرُ ﴿١٨﴾ ﴾ (الأنعام ٠١٨)

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब् है और वह हिकमत् वाला ख़बर रखने वाला है। ( सूरा अन्आम १८ )

## और हमारा ईमान है कि :-

﴿ إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ(٣) ﴾ ( يونس ٠٠٣ )

तुम्हारा पालन्हार अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छ (६) दिन में बनाया फिर अर्श ( सिंहासन ) पर मुस्तवी ( विराजमान ) हुआ। वही हर काम का इन्तिज़ाम करता है। उस की अनुमति के बिना कोई सिफारिश् नहीं कर सकता। वही तुम्हारा रब है इस लिए तुम उसी की इबादत् करो। पस् तुम नसीहत् क्यों नहीं पकड़ते ? ( सूरा यूनुस् ३ )

और अल्लाह के अर्श पर मुस्तवी होने का अर्थ यह है कि वह अपनी ज़ात के साथ उस पर बुलन्द व बाला हुआ जैसी बुलन्दी उस की अज़्मत् व जलाल के शायाने शान है। उस के सिवा किसी को भी उस बुलन्दी की कैफियत् मालूम नहीं।

और हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि अल्लाह तआला अपने अर्श पर होते हुए अपनी मख़्लूक़ के साथ भी है , उन के हालात जानता है , उन की बातों को सुनता है , उन के कामों

को देखता है और जितनी भी मख़्लूक़ात तथा प्राणी हैं सब की जरूरतें पूरी करता है , उन के सब कामों की तद्बीर तथा उपाय करता है , फक़ीर को रोज़ी देता है , कम्ज़ोर को ताक़त् बख़्शता है , जिसे चाहता है बादशाही प्रदान करता है और जिस से चाहता है बादशाही छीन लेता है , जिसे चाहता है इज़्ज़त् देता है और जिसे चाहता है ज़लील व रुस्वा कर देता है , हर प्रकार की भलाई केवल उसी के हाथ में है और वह हर चीज़ पर क़ुद्रत् रखता है । और जिस ज़ात की यह शान (महिमा) हो तो वह वास्तव में अपनी मख़्लूक़ से बुलन्द व बाला अपने अर्श पर होने के बावजूद हक़ीक़त् में अपनी मख़्लूक़ के साथ होता है ।

अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ ۝١١﴾ (الشورى ١١)

उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह खूब देखने वाला सुनने वाला है । ( सूरा शूरा ११ )

हम जह्मीया में से हुलूलीया फिरक़ा की तरह् यह नही कहते कि अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ के साथ ज़मीन में है और हमारा विचार है कि जो आदमी ऐसा कहे वह या तो गुम्राह है या काफिर , क्योंकि उस ने अल्लाह का नाक़िस् ( अपूर्ण तथा ऐबदार ) सिफत् ( गुण – विशेषता ) बयान किया है और नाक़िस् अवसाफ ( ऐबदार गुण ) उस के शायाने शान नहीं ।

**और हमारा इस पर भी ईमान है कि :–** रसूलुल्लाह ﷺ ने अल्लाह तआला के बारे में ख़बर दी है कि हर रात जब एक तिहाई रात बाक़ी रह जाती है तो अल्लाह तआला पहले आसमान पर तश्रीफ लाते हैं और कहते हैं :–

من يدعوني فأستجيب له ؟ من يسألني فأعطيه ؟ من يستغفرني فأغفر له ؟

कौन मुझे पुकारता है कि मैं उस की दुआ क़बूल करूँ , कौन मुझ से माँगता है कि मैं उसे प्रदान करूँ , कौन मुझ से माफी का तलब्गार है कि मैं उस के गुनाह बख़्श दूँ ।

**और हमारा ईमान है कि : –** अल्लाह तआला क़यामत् के दिन बन्दों के बीच फैसला करने के लिए तश्रीफ लाएगा। अल्लाह तआला इस विषय में फरमाते हैं :–

﴿ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا(٢١)وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا(٢٢)وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى(٢٣) ﴾ (الفجر ٢١–٢٣)

तो ज़मीन जब कूट कूट कर पस्त कर दी जायेगी और तुम्हारा रब् आयेगा और फरिश्ते क़तार दर क़तार (पंक्तिबद्ध होकर ) आ पहुँचेंगे और उस दिन जहन्नम ( नरक) को लाया जायेगा तो आदमी को उस दिन समझ आ जायेगी लेकिन् उस दिन समझ आने से क्या फाइदा ? ( सूरा फज्र २१ , २२ , २३ )

**और हमारा ईमान है कि :–**

﴿ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴾ (هود ١٠٧)

वह जो चाहे कर देता है। ( सूरा हूद १०७ )

**और हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि :–** उस के इरादा (इच्छा ) की दो क़िस्में हैं।

## १. इरादा कौनीया

यह हर हालत् में हो कर रहता है और जरूरी नहीं कि इस की मुराद अल्लाह को पसन्द भी हो , और यह मशीअत् ( इच्छा ) के अर्थ में इस्तेमाल होता है । जैसा कि अल्लाह तआला फरमाते हैं :-

﴿ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلُوا۟ وَلَـٰكِنَّ ٱللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾ ﴾ (البقرة ٢٥٣)

और अगर अल्लाह चाहता तो यह लोग आपस में लाड़ाई न करते लेकिन् अल्लाह जो चाहता है करता है । ( सूरा बक़रा२५३ ) और फरमाया :-

﴿ وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ(٣٤)﴾ (هود ٣٤ ،)

और अगर मैं चाहूँ कि तुम्हारी ख़ैर ख़वाही करूँ और अल्लाह यह चाहे कि तुम्हें गुम्राह कर दे तो मेरी ख़ैर ख़वाही कुछ भी फाइदा नहीं दे सकती । वही तुम्हारा रब् है उसी के पास तुम सब लौटाये जाओगे । ( सूरा हूद ३४ )

## २. इरादा शरअीया

कोई जरूरी नहीं है कि यह हो कर ही रहे मगर इस की मुराद अल्लाह तआला को महबूब ( प्रिय ) और पसन्दीदा होती है । जैसा कि अल्लाह तआला इस बारे में फरमाते हैं :-

﴿ وَٱللَّهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ ﴿٢٧﴾ ﴾ (النساء ٢٧ ،)

अल्लाह तो चाहता है कि तुम्हारी तौबा क़बूल करे । ( सूरा निसा २७ )

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला की मुराद ( इरादा ) चाहे वह कौनी हो या शरआ़ी उस की हिक्मत् के अधीन है। इस लिए अल्लाह तआला जो कुछ पैदा करने का फैसला करता है या जिस किसी चीज़ के माध्यम मख़्लूक़ से धर्म विधान अनुसार इबादत का तक़ाज़ा करता है तो उस में जरूर कोई हिकमत् होती है और वह ठीक उसी हिकमत् के मुताबिक़ अन्जाम पाता है। चाहे हमें उस का ज्ञान हो सके या हमारी बुद्धि उस हिकमत् को समझने से आजिज़् (विनीत) रह जाये। अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِأَحْكَمِ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴾ (التين ٠٠٨)

क्या अल्लाह सब से बड़ा हाकिम् नहीं है। ( सूरा तीन ८ )
और फरमाते हैं :–

﴿ أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنْ اللَّهِ حُكْمًا لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ(٥٠) ﴾ (المائدة ٠٥٠)

क्या ये मक्का के बहुदेववादी ज़मानये जाहिलीयत् का हुकम चाहते हैं और जो लोग अल्लाह पर विश्वास रखते हैं उन के लिए अल्लाह से अच्छा हुकम किस का है। ( सूरा माइदा ५० )
और हमारा अक़ीदा है कि अल्लाह तआला अपने अवलिया ( नेक बन्दों ) से मोहब्बत् करता है और वे अल्लाह से मोहब्बत् करते हैं। इस बारे में अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ(٣١) ﴾ (آل عمران ٠٣١)

ऐ मोहम्मद आप कह दीजिए कि अगर तुम अल्लाह से मोहब्बत् रखते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह भी तुम से मोहब्बत करेगा। ( सूरा आलेइम्रान ३१ )

﴿ فَسَوْفَ يَأْتِي ٱللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُۥٓ ﴾ (المائدة ٠٥٤)

तो अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा जिन से वह मोहब्बत करेगा और वे उस से मोहब्बत करेंगे। ( सूरा माइदा ५४ )
और अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ وَٱللَّهُ يُحِبُّ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴾ (آل عمران ١٤٦)

और अल्लाह सब्र करने वालों से प्रेम करते हैं। ( सूरा आले इम्रान १४६ )

﴿ وَأَقْسِطُوٓاْ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُقْسِطِينَ ﴾ (الحجرات ٠٠٩)

और इन्साफ करो बे शक् अल्लाह इन्साफ करने वालों से मोहब्बत् करता है। ( सूरा हुजुरात ९ )
और फरमाया :–

﴿ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ(١٩٥) ﴾ ( البقرة )

और नेकी करो बेशक् अल्लाह नेकी करने वालों से मोहब्बत् करता है। ( सूरा अल्माइदा ९३ )

**और हमारा ईमान है कि :–** अल्लाह तआला ने जिन कामों और बातों को शरीअत् में जायज् ( वैध ) ठहराया है वे

उसे पसन्दीदा ( प्रिय ) हैं और जिन से मना फरमाया है ( अवैध ठहराया है ) वे उसे ना पसन्दीदा ( अप्रिय ) हैं। अल्लाह तआला इस विषय में फरमाते हैं।

﴿ إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضَى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ﴾ (الزمر ٠٠٧)

अगर तुम नाशुक्री करोगे तो अल्लाह तुम से बे परवाह है और वह अपने बन्दों के लिए नाशुकरी पसन्द नहीं करता और अगर शुकर करोगे तो वह उस को तुम्हारे लिए पसन्द फरमाएगा। ( सूरा ज़ुमर ७ )

﴿وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ(٤٦) ﴾

(التوبة ٠٤٦)

लेकिन अल्लाह ने उन का उठना ( और निकलना ) पसन्द नहीं फरमाया , तो उन्हें हिलने जुलने ही न दिया और उन से कह दिया गया कि जहाँ बीमार लोग बैठे हैं तुम भी उन के साथ बैठे रहो। ( सूरा तौबा ४६ )

**और हमारा ईमान है कि :** – अल्लाह तआला उन लोगों से राज़ी ( प्रसन्न ) होता है जो ईमान लाते हैं और नेक अमल् करते हैं। अल्लाह तआला फरमाते हैं :-

﴿ رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُواْ عَنْهُۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُۥ ﴿٨﴾ ﴾(البينة ٠٠٨)

अल्लाह उन से राज़ी ( प्रसन्न ) और वे अल्लाह से राज़ी ( प्रसन्न )। यह रज़ामन्दी ( प्रसन्नता ) की नेमत उस आदमी के लिए है जो अपने रब् से डरता हो। ( सूरा बय्यिना ८ )

**और हमारा ईमान है कि :–** काफिर तथा मुश्रिक् आदि जो लोग ग़ज़ब् के मुस्तहिक् हैं अल्लाह तआला उन पर गुस्सा और नाराज़ होता है। अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ

(٦) ﴾ (الفتح ٠٠٦)

जो लोग अल्लाह के बारे में बुरे बुरे विचार रखते हैं उन्हीं पर बुराई का चक्र है और अल्लाह उन से नाराज़ ( अप्रसन्न ) हुआ। ( सूरा फतह् ६ )

﴿ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنْ اللَّـهِ وَلَهُـمْ

عَذَابٌ عَظِيمٌ(١٠٦) ﴾ (النحل ١٠٦)

लेकिन् जो दिल खोल कर कुफ्र करे तो ऐसों पर अल्लाह का ग़ज़ब् ( क्रोध ) है और उन को बड़ा सख़्त अज़ाब होगा। ( सूरा नह़ल १०६ )

**और हम इस पर भी ईमान रखते हैं कि :–** अल्लाह का जलाल व इक्राम से मौसूफ मुबारक् चेहरा भी है। अल्लाह फरमाते हैं

﴿ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ ﴾ (الرحمن ٠٢٧)

और तेरे रब् का चेहरा जो जलाल व अज्मत् वाला है केवल बाक़ी रहेगा। ( सूरा रह़मान २७ )

**और हमारा ईमान है कि :–**

अल्लाह तआला के अज्मत व करम् वाले दो हाथ हैं। फरमाया

﴿ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ﴾ (المائدة ٠٦٤)

बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हुये हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। ( सूरा माइदा ६४ )

और फरमाया :–

﴿ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ(٦٧) ﴾ (الزمر ٠٦٧)

और उन्हों ने अल्लाह की क़दर व तअ्ज़ीम ( सम्मान तथा आदर ) जैसी करनी चाहिए थी नहीं की। और क़यामत के दिन तमाम ज़मीन उस की मुठ्ठी में होगी और सारे आसमान उस के दाहिने हाथ में होंगे। और अल्लाह की ज़ात उन के शिर्क से पवित्र तथा बहुत बुलन्द है। ( सूरा ज़ुमर ६७ )

## और हमारा ईमान है कि :–

अल्लाह तआला की दो ह़क़ीक़ी आँखें हैं जिस की दलील निम्नलिखित आयत और ह़दीसे नबवी है। अल्लाह तआला फरमाते हैं।

﴿ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا ﴾ (هود ٠٣٧)

और एक नाव हमारे आदेश से हमारी आँखों के सामने बनाओ। ( सूरा हूद ३७ )

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया :–

(( حجابه النور لوكشفه لاحرقت سبحات وجهه ماانتهى إليه بصره من خلقه ))

अल्लाह का परदा नूर है अगर वह उसे उठा दे तो उस के मुबारक चेहरे की ज्योतियाँ जहाँ तक उस की निगाह पहुँचे उस की मख़्लूक़ को जलाकर राख कर दें। ( ह़दीस )
और अहले सुन्नत का इस बात पर इजमाअ़ ( इत्तिफाक़) है कि अल्लाह की आँखें दो हैं और इस बात की पुष्टि निम्नलिखित ह़दीस से भी होती है।

(( انه أعور وإن ربكم ليس بأعور ))

दज्जाल काना है और तुम्हारा रब् इस ऐब से पाक है। (ह़दीस)

## और हमारा ईमान है कि :- ☐

﴿ لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ(١٠٣)

﴾ (الأنعام ١٠٣)

वह ऐसा है कि आँखें उसे नहीं देख सकतीं और वह सभी को देखता है और वह बारीक से बारीक चीज़ों को देखता है और हर चीज़ की ख़बर रखता है। ( सूरा अन्आ़म १०३ )

## और हमारा इस पर भी ईमान है कि :-

मोमिन लोग क़यामत् के दिन अपने रब् की दीदार ( दर्शन) से लुत्फअन्दोज़ ( आनन्दित ) होंगे। अल्लाह तआला फरमाते हैं।

﴿ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ ﴾ (القيامة ٢٢-٢٣)

उस दिन बहुत से चेहरे खुश ( प्रफुल्लित ) होंगे अपने रब् की दीदार ( दर्शन ) कर रहे होंगे । ( सूरा क़यामा २२ , २३ )

**और हमारा ईमान है कि :–** अल्लाह तआला अपने तमाम गुण विशेषताओं ( सिफात ) में कमाल ( खूबियों से परिपूर्ण होने ) के कारण उस के समान कोई नहीं है । अल्लाह तआला का फरमान है ।

﴿ لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ۝ ﴾ (الشورى ١١)

उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह खूब सुनने वाला और देखने वाला है । ( सूरा शूरा ११ )

**और हमारा ईमान है कि :–**

﴿ لَا تَأْخُذُهُۥ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ﴾ (البقرة ٥٥)

उसे ऊँघ और नींद नहीं आती । ( बक़रा ५५ )

क्योंकि उस में जीवन और सब को संभालने की विशेषताएँ उच्चा स्तर की तथा अत्याधिक पाई जाती हैं ।

**और हमारा ईमान है कि :–** वह अपने न्याय और इन्साफ के कारण किसी पर जुल्म तथा अत्याचार नहीं करता । और अपने ज्ञान , विद्या तथा सर्वदर्शी , सर्वसाक्षी होने के कारण वह अपने बन्दों के कार्य से कभी बे ख़बर नहीं होता । **और हमारा ईमान है कि :–** उस के सर्वज्ञानी , सर्वदर्शी , सर्वसाक्षी और सर्वशक्तिमान एवं सर्वश्रेष्ठ होने के कारण आसमानों तथा ज़मीन की कोई चीज़ उसे लाचार और मज्बूर नहीं कर सकती । अल्लाह तआला फरमाते हैं ।

﴿ إِنَّمَآ أَمۡرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيۡـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾ ﴾(يس ٨٢)

उस की शान तो यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे आदेश देता है कि हो जा तो वह हो जाती है। ( सूरा यासीन ८२ )

और यह कि अपने सर्वशक्तिमान तथा अपरमपार बल्वान होने के कारण उसे कभी लाचारी और थकावट् का सामना नहीं करना पड़ता। अल्लाह तआला फरमाते हैं :-

﴿ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ(٣٨) ﴾ (ق ٣٨)

और हम ने आसमानों तथा ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के बीच हैं सब को छ (६) दिन में पैदा कर दिया और हमें ज़रा सी भी थकावट् नहीं हुई। ( सूरा क़ाफ ३८ )

लुगूब का शब्द आजिज़ी और थकावट् दोनों अर्थ में प्रयोग होता है।

**और हमारा ईमान :-** अल्लाह तआला के उन तमाम नामों तथा गुण विशेषताओं ( सिफात ) पर है जिन का प्रमाण स्वयं अल्लाह की बातों ( कुरआन ) से या उस के रसूल की बातों ( हदीस ) से मिलता है लेकिन् हम दो बड़ी ग़ल्तियों से अपने आप को बचाते हैं और उस से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

## १. अत्तम्सील

यानी दिल या ज़बान से यह कहना कि अल्लाह तआला की सिफात ( गुण, विशेषताएँ ) मख़्लूक़ की सिफात की तरह हैं।

## २. अत्तकयीफ

**दिल या ज़बान से यह कहना कि अल्लाह की सिफात इस प्रकार हैं।**

**हमारा ईमान है कि :–** अल्लाह तआला उन तमाम सिफात से पवित्र तथा पाक व साफ है जिन का अपनी ज़ात के बारे में उस ने स्वयं या उस के रसूल ने इनकार किया है। याद रहे कि उस इनकार में उस के प्रतिकूल खूबियों से परिपूर्ण गुण विशेषताओं का प्रमाण भी है। और जिन सिफात के बारे में अल्लाह और उस के रसूल दोनों चुप हैं हम भी उन के बारे में चुप रहते हैं। और हम समझते हैं कि इस रासते पर चलना अनिवार्य है और इस के बिना कोई चारा नहीं। क्योंकि जिन चीज़ों को अपनी ज़ात के लिए स्वयं अल्लाह ने साबित् किया या उन का इनकार किया है तो उस ने अपनी ज़ात के बारे में ख़बर दे दी है और अपनी ज़ात को वही सब से बेहतर जानता है। फिर अच्छी तरह स्पष्ट रूप से बयान करने में और सच्ची बात कहने में वह बे मिसाल ( अनुपम ) है। और बन्दो का इलम तो उस की ज़ात का हरगिज् इहाता नहीं कर सकता। और अल्लाह तआला की जिन सिफात के वजूद या उन के इनकार का प्रमाण रसूलुल्लाह ﷺ से मिलता है वह आप की तरफ से अल्लाह की ज़ात के बारे में खबरें हैं। और लोगों में सब से बढ़ कर रसूलुल्लाह ﷺ को ही अल्लाह के बारे में इलम था और आप ﷺ सम्पूर्ण मख़लूक़ में सब से अधिक ख़ैरख़्वाह, सच्चे और मधुर भाषी थे। इस से यह परिणाम निकला कि जब अल्लाह तआला और उस के रसूल ﷺ का कलाम ( बात ) ज्ञान, विद्या तथा सच्चाई से परिपूर्ण और स्पष्ट रूप से बयान करने में सब से उत्तम और सब से बढ़कर है तो उसे स्वीकार करने में न कोई बहाना हो सकता है और न उसे इनकार करने का कोई कारण।

# अध्याय – २

अल्लाह तआला की वह तमाम सिफात ( विशेषताएँ ) जिन का हम ने पिछले पृष्ठों में विस्तृत या संक्षिप्त नकारातमक या सकारातमक रूप से वर्णन किया है हम उन सब के बारे में अपने महान रब् की किताब पवित्र क़ुरआन और अपने नबीए करीम ﷺ की सुन्नते मुतह्हरा पर भरोसा करते हैं , उम्मत् के सलफे स्वालिहीन और उन के बाद आने वाले अइम्मए हिदायत् के नक़शे क़दम् पर चलते हैं ।

और हमारे नज़दीक अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूलुल्लाह ﷺ की नुसूस ( क़ुरआन की आयतें और ह़दीस के शब्द ) को उन के जाहिरी अर्थ और अल्लाह तआला की शान के लायक़ हक़ीक़तों पर मह़मूल करना ( मानना तथा समझना ) अनिवार्य है ।

## और हम बेज़ारी व बराअत् तथा अलग् थलग् रहने का एलान ( घोषणा ) करते हैं :–

(क)फेर बदल ( परिवर्तन ) करने वालों के कार्य प्रणाली से :– जिन्हों ने क़ुरआन व सुन्नत के नुसूस में अल्लाह तथा उस के रसूल की इच्छा व मुराद के विरुद्ध परिवर्तन तथा फेर बदल किया और उन से ग़लत् अर्थ निकाला ।

(ख) और अर्थहीन करने वालों के कार्यविधि से :– जिन्हों ने उन नुसूस को अल्लाह तथा उस के रसूल के उद्देश्य तथा इच्छा एवं मुराद से भङ्ग करके अर्थहीन कर दिया ।

(ग) और अतियुक्ति करने वालों ( सीमा से आगे बढ़ने तथा ग़ुलू और मुबालग़ा करने वालों ) के तुच्छ आचरण से :- जिन्हों ने उन नुसूस के अर्थ तथा उद्देश्य को मानवीय विशेषताओं तथा गुणों पर अनुमान करके उस का उदाहरण दिया या कष्ट करके अल्लाह तआला की उन विशेषताओं की कैफियत् तथा विवरण बयान किया जिन पर ये नुसूस दलालत् करती हैं ।
और हमें पूर्ण विश्वास है कि जो कुछ अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत में मौजूद है वह सब सत्य हैं । उन में किसी भी प्रकार का कोई मतभेद और टकराव नहीं है । इस का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फरमान है ।

﴿ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا(٨٢) ﴾ (النساء ٨٢)

भला ये लोग कुरआन में विचार क्यों नहीं करते अगर यह अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का कलाम होता तो इस में बहुत अकिध मत्भेद तथा टकराव पाते । ( सूरा निसा ८२ )
अर्थात किसी बात में आपसी टकराव तथा मत्भेद का परिणाम यह है कि उस का एक भाग दूसरे भाग को झुटलाता है और अल्लाह तआला तथा रसूलुल्लाह ﷺ से साबित ख़बरों में ऐसा होना असम्भव है । और जो आदमी यह दावा करता है कि अल्लाह की किताब कुरआन और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत में या उन दोनों के बीच आपस में मत्भेद या टक्राव है तो उस के इस दावे की हक़ीक़त् तुच्छ उद्देश्य और दिल की कजी ( टेढ़ापन) के सिवा और कुछ नहीं है । उसे चाहिए कि अल्लाह तआला से तौबा करे और टेढ़ी चाल चलने से रुक जाए । और

जो आदमी इस तुच्छ भावना या भ्रम में ग्रस्त है कि अल्लाह की किताब पवित्र कुरआन में और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत में या उन दोनों के बीच आपस में मत्भेद तथा टकराव है तो इस का कारण ज्ञान तथा विद्या की कमी है या उस में समझने की शक्ति नहीं है या फिर सोच विचार करने में कोताही करता है। अतः उस के लिए जरूरी है कि ज्ञान तथा विद्या ( इलम) की खोज में लगा रहे , ग़ौर व फिक्र एवं सोच विचार करता रहे और सच्चाई तथा हक् बात तक पहुँचने की प्रयास करता रहे और उस की यह कोशिश् उस समय तक जारी रहनी चाहिये जब तक कि हक् बात उस पर स्पष्ट न हो जाए। अगर इन तमाम कोशिशों के बावजूद उसे हक़ की रौशनी नसीब न हो तो मामिला किसी ज्ञानी , धार्मिक विद्वान तथा बुद्धि जीवी पर छोड़ दे और अपने भ्रम तथा तुच्छ भावनाओं को समाप्त करके अनुभवी तथा सिपालु बुद्धिजीवी की तरह यह कहे :-

﴿ ءَامَنَّا بِهِۦ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ﴿٧﴾ ﴾ (آل عمران ٧٠٠)

हम इस ( कुरआन ) पर ईमान लाए यह सब कुछ हमारे रब् के यहाँ से आया है। ( सूरा आलेइम्रान ७ )

और अच्छी तरह जान ले कि कुरआन व सुन्नत में और इन दोनों के बीच एक दूसरे में कोई मत्भेद तथा टकराव नहीं है।
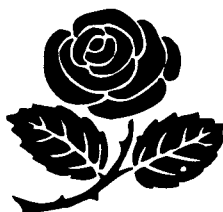
# अध्याय – ३

## फरिश्तों पर ईमान

और हम अल्लाह के फरिश्तों पर ईमान रखते हैं और इस पर कि वे अल्लाह के :-

﴿ عِبَادٌ مُكْرَمُونَ(٢٦)لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ(٢٧) ﴾

(الأنبياء ٢٦-٢٧)

मुकर्रम् बन्दे हैं उस के आगे बढ़कर बोल नहीं सकते और केवल उस के आदेशानुसार काम करते हैं। ( अम्बिया २६,२७ ) अल्लाह ने उन्हें पैदा फरमाया है , वे उस की इबादत में ब्यस्त रहते हैं और फरमाँबरदारी ( आज्ञापालन ) के लिए हाथ बाँधकर खड़े रहते हैं।

﴿ وَمَنْ عِندَهُۥ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِۦ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝١٩

يُسَبِّحُونَ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ۝٢٠ ﴾ (الأنبياء ١٩-٢٠)

वे फरिश्ते उस की इबादत से न मुँह मोड़ते हैं और न उकताते हैं। दिन–रात उस की तस्बीह करते रहते हैं रुकते नहीं हैं। ( सूरा अम्बिया १९ , २० )

अल्लाह तआला ने उन्हें हमारी नजरों से ओझल् रखा है इस लिए हम उन्हें देख नहीं सकते। कभी कभी अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों के सामने उन्हें जाहिर भी कर देता है। जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक बार हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम को उन के असली रूप में देखा , उन के छ सो (

६००) पर (पङ्ख) थे और उन्हों ने आसमान के पूरे किनारों ( क्षितिज ) को ढाँप रखा था।

और हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हजरत मरयम् अलैहस्सलाम के पास आदमी का रूप धारण किया तो हजरत मरयम् अलैहस्सलाम ने उन से बातें कीं और उन्हों ने उत्तर दिया।

एक बार रसूलुल्लाह ﷺ के पास सहाबए किराम तश्रीफ फरमा थे कि उसी समय हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम ऐसे आदमी की शकल् ( रूप ) में तश्रीफ लाए जिसे न कोई पहचानता था और न उस पर सफर ( यात्रा) के कोई आसार् ( चिन्ह ) दिखाई देते थे, कपड़े बहुत अधिक सफेद, बाल बहुत अधिक काले रसूलुल्लाह ﷺ के सामने आप ﷺ के घुटने से घुटना मिलाकर बैठ गये और हाथ आप ﷺ की रानों पर रख लिए। फिर रसूलुल्लाह ﷺ से इस्लाम धर्म के बारे में कुछ प्रश्न किये और रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के प्रश्नों के उत्तर दिये और उन के जाने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा को बतलाया कि यह हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम थे जो तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने आये थे।

**और हमारा ईमान है कि :–** फरिश्तों के जिम्मे कुछ काम लगाये गये हैं जिन को वे खूब अच्छी तरह पूरा करते हैं और अपनी डियूटी निभाते हैं।

अतः उन में एक हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं जिन को वह्य का काम सौंपा गया है जिसे वह अल्लाह के पास से लाते और अम्बिया तथा रसूलों में से जिस पर अल्लाह चाहते हैं नाज़िल करते हैं।

और एक उन में से हजरत मीकाईल अलैहिस्सलाम हैं। बारिश् और खेती उगाने की जिम्मेदारी उन को सौंपी गई है।
और एक इस्राफील अलैहिस्सलाम हैं। जिन के जिम्मा क़यामत आने पर पहले लोगों को बेहोश करने के लिए, फिर दोबारा जिन्दा करने के लिए सूर फूँकना है।
और एक हजरत मलकुल्मौत अलैहिस्सलाम हैं जिन के जिम्मा मौत के समय रूह ( प्राण ) निकालना है।
और एक हजरत मलकुल् जिबाल अलैहिस्सलाम हैं जिन के जिम्मा पहाड़ों के कार्यभार हैं।
और एक उन में से हजरत मालिक् अलैहिस्सलाम हैं जो जहन्नम के दारोग़ा हैं।
और कुछ फरिश्ते उन में से माँ के पेट ( गर्भाशय) में बच्चों के सम्बन्ध में नियुक्त किए गए हैं। और कुछ आदम की औलाद की रक्षा के लिए नियुक्त हैं।
और फरिश्तों की एक जमाअत् के जिम्मा मानव के कर्मों को लिखना है। हर आदमी पर दो फरिश्ते नियुक्त हैं।

﴿ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ(١٧)مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ(١٨) ﴾ (ق ٠١٧-٠١٨)

जो दायें बायें बैठे हैं। कोई बात उस की ज़बान पर नहीं आती मगर एक निगह्बान उस के पास लिखने को तैयार रहता है। ( सूरा क़ाफ १७, १८ )
एक गिरोह **मøot** से सवाल करने पर नियुक्त है। जब **मøot** मौत के बाद अपने ठेकाने पर पहुँचा दी जाती है तो उस के

पास दो फरिश्ते आते हैं , उस के रब् , उस के दीन और नबी के बारे में सवाल करते हैं तो :-

﴿ يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ

وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ(٢٧)﴾ (ابراهيم ٢٧ ٠)

अल्लाह ईमानदारों को पक्की बात ( कलमए तैयबा ) पर दुनिया की ज़िन्दगी में भी साबित् क़दम् रखता है और आख़िरत में भी रखेगा और अल्लाह अत्याचारों को गुम्राह कर देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है ।

और उन में से कुछ फरिश्ते जन्नतियों के यहाँ नियुक्त हैं ।

﴿ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ(٢٣)سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

عُقْبَى الدَّارِ(٢٤) ﴾ (الرعد ٢٣ ٠-٢٤ ٠)

हर एक दरवाज़े से उन के पास आयेंगे और कहेंगे तुम पर सलामती हो यह तुम्हारी साबित क़दमी के कारण है और आख़िरत वाला घर क्या ही अच्छा है ।

और रसूलुल्लाह ﷺ ने बताया कि आसमान में (( अल्बैतुल् मअ्मूर )) है जिस में प्रति दिन सत्तर हज़ार फरिश्ते दाख़िल् होते हैं - एक रिवायत के अनुसार उस में नमाज़ पढ़ते हैं - और जो एक बार दाख़िल हो जाते हैं उन की बारी दोबारा कभी नहीं आती ।

# अध्याय – ४

## अल्लाह की किताबों पर ईमान

**हमारा ईमान है कि :–** अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर किताबें नाज़िल फरमाईं जो सम्पूर्ण संसार के लिए अल्लाह की ओर से प्रमाण और अमल् करने वालों के लिए रौशनी के मनारे हैं। पैगम्बर इन किताबों के माध्यम से लोगों को दीन की तालीम देते और उन के दिलों की सफाई फरमाते रहे हैं।

**और हमारा ईमान है कि :–** अल्लाह ने हर रसूल के साथ एक किताब नाज़िल फरमाई। अल्लाह तआला का फरमान है।

﴿ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ﴾ (الحديد ٢٥ ٠)

अवश्य हम ने अपने रसूलों को खुली निशानियाँ देकर भेजा और उन पर किताबें नाज़िल कीं और तराज़ू ( न्याय शास्त्र ) भी ताकि लोग इन्साफ पर क़ायम् रहें। ( सूरा ह़दीद २५ )

और हमें उन में से निम्नलिखित किताबों का ज्ञान है।

### १. तौरात

जिसे अल्लाह तआला ने हजरत मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल् फरमाया और वह बनी इस्राईल की किताबों में सब से मुख्य तथा श्रेष्ठ किताब है।

﴿ إِنَّا أَنزَلْنَا التَّوْرَاةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِي وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ(٤٤) ﴾

(المائدة ٤٤ ٠)

बे शक् हम ने तौरात नाज़िल किया जिस में हिदायत् और रौशनी है , उसी अनुसार अम्बिया अलैहिमुस्सलाम जो अल्लाह के फरमाँबरदार थे , यहूदियों को हुकम देते रहे और धार्मिक विद्वान तथा अल्लाह वाले बुद्धिजीवी लोग भी , क्योंकि वे अल्लाह की किताब के रक्षक नियुक्त किये गये थे और इस पर वे गवाह थे । फिर तुम लोगों से न डरो बल्कि केवल मुझ से डरो और मेरी आयतों को दुनिया की थोड़ी थोड़ी क़ीमतों के बदले मत बेचो और जो आदमी अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब अनुसार फैसला न करे पस वही लोग काफिर हैं । ( सूरा अलमाइदा ४४ )

## २ . इनजील

जिसे अल्लाह तआला ने हजरत ईसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल फरमाया और वह तौरात की पुष्टि करती थी और उसे मुकम्मल् करने वाली थी । अल्लाह तआला फरमाते हैं ।

﴿ وَقَفَّيْنَا عَلَى آثَارِهِمْ بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَاةِ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَاةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ(٤٦) ﴾ (المائدة ٤٦)

और हम ने उन के पीछे मरयम् के पुत्र हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को भेजा जो अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तस्दीक़ करने वाले थे और अल्लाह ने उन्हें इन्जील प्रदान की जिस में नूर और हिदायत थी और वह अपने से पहले की किताब तौरात की तस्दीक़ करती थी और वह सरासर हिदायत् तथा नसीह़त् थी परहेज़गारों के लिए। ( सूरा माइदा ४६ )

और फरमाया :-

﴿ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ ٱلَّذِى حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ﴾ (آل عمران ٥٠)

और ( मैं इस लिए भी आया हूँ ) कि कुछ चीज़ें जो तुम पर ह़राम थीं उन को तुम्हारे लिए ह़लाल कर दूँ।

## ३ . ज़बूर

जिसे अल्लाह ने हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम को प्रदान किया।

## ४ हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा अलैहिमस्सलाम के सह़ीफे।

## ५ . कुरआन मजीद

जिसे अल्लाह ने हजरत मुह़म्मद ﷺ पर नाज़िल् फरमाया।

﴿ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْهُدَىٰ وَٱلْفُرْقَانِ ﴾ (البقرة ١٨٥)

जो लागों के लिए हिदायत और हिदायत की स्पष्ट निशानियाँ हैं और जो सत्य असत्य को अलग अलग करने वाला है। ( सूरा बक़रा १८५ )

और फरमाया :–

﴿ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلْكِتَـٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ﴾ (المائدة ٤٨)

यह कुरआन अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और उन सब पर निगराँ ( रक्षक ) है। ( सूरा माइदा ४८ )

पवित्र कुरआन द्वारा अल्लाह तआला ने पिछली तमाम किताबों को मन्सूख़ ( रद्द तथा स्थगित ) कर दिया। आवारा स्वभाव लोगों की बेहूदगी और परिवर्तन एवं फेर बदल् करने वालों के मक्र व फरेब ( षडयन्त्र ) से सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी अल्लाह ने स्वयं अपने जिम्मे ली है। अल्लाह तआला इस बारे में फरमाते हैं।

﴿ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا ٱلذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَـٰفِظُونَ ۝٩ ﴾ (الحجر ٩)

बे शक् ज़िक्र ( कुरआन ) हम ने ही उतारा है और हम ही उस के निरिक्षक हैं। ( सूरा हिज्र ९ )

क्योंकि वह क़यामत तक के लिए अल्लाह की तमाम मख़लूक़ात पर तर्क तथा प्रमाण बनकर बाक़ी रहेगा और जहाँ तक पिछली आसमानी किताबों का सम्बन्ध है तो वे एक निश्चित समय तक के लिए हुआ करती थीं और जब दूसरी किताब नाज़िल् हो जाती तो पहली को मन्सूख़ कर देती और उस में किये गये परिवर्तन तथा फेर बदल् को भी स्पष्ट रूप से बयान कर देती। यही कारण है कि पवित्र कुरआन से पहले की कोई भी आसमानी किताब परिवर्तन तथा हेर फेर से सुरक्षित न थी।

अत : कुरआन पाक से पहले की आसमानी किताबों में परिवर्तन , वृद्धि और कमी सब कुछ हो चुका था । जैसा कि पवित्र कुरआन ने इस का प्रतिपादन ( विज़ाहत ) कर दिया है । अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ مِّنَ ٱلَّذِينَ هَادُوا۟ يُحَرِّفُونَ ٱلْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِۦ ﴿٤٦﴾ ﴾ (النساء ٠٤٦)

यहूदियों में से कुछ ऐसे भी हैं जो तौरात के वाक्य को उन की जगहों से बदल देते हैं । ( सूरा निसा ४६ )

﴿ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا يَكْسِبُونَ(٧٩) ﴾ (البقرة ٠٧٩)

तो उन लोगों पर अफ्सोस जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं फिर कहते हैं कि यह अल्लाह के पास से आई है ताकि उस के बदले थोड़ी सी क़ीमत ( अर्थात संसारिक लाभ ) प्राप्त करें । पस् अफ्सोस है उन पर जो वे अपने हाथों से लिखते हैं और इस पर भी अफ्सोस जो वे ऐसी कमाई करते हैं । ( सूरा बक़रा ७९ )

﴿ وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُمْ مَا لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلْ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ(٩١) ﴾ (الأنعام ٠٩١)

और उन लोगों ने अल्लाह की जैसी क़दर करना वाजिब थी वैसी क़दर न की जब कि यूँ कह दिया कि अल्लाह ने किसी आदमी पर कोई चीज़ नाज़िल् नहीं की। आप यह कहिए कि वह किताब किस ने नाज़िल की है जिस को मूसा लाये थे जिस की कैफियत् यह है कि वह नूर है और लोगों के लिए वह हिदायत् है जिस को तुम ने उन अलग् अलग् पन्नों में रख छोड़ा है जिन को जाहिर करते हो और बहुत सी बातों को छिपाते हो और तुम को बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिन को तुम न जानते थे और न तुम्हारे बड़े। आप कह दीजिए कि अल्लाह ने नाज़िल् फरमाया है। फिर उन को उन के खुराफात में खेलते रहने दीजिए। ( सूरा अन्आम ९१ )

﴿ وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُونَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ(٧٨)مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ(٧٩) ﴾ (آل عمران ٧٨-٧٩)

और उन अहले किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो किताब ( तौरात) को ज़बान मरोड़ मरोड़ कर पढ़ते हैं ताकि तुम समझो कि जो कुछ वे पढ़ते हैं किताब में से है हालाँ कि वह किताब में से नहीं होता। और कहते हैं कि वह अल्लाह की ओर से नाज़िल हुआ है हालाँकि वह अल्लाह की ओर से नहीं होता और अल्लाह

पर झूठ बोलते हैं । हालाँकि वे लोग यह बात जानते भी हैं । किसी व्यक्ति को यह शायाने शान नहीं कि अल्लाह तो उसे किताब , हुकम तथा नुबूवत् प्रदान करे और वह लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे हो जाओ । बल्कि वह तो कहेगा कि तुम सब केवल अल्लाह ही की बन्दगी करो तुम्हारे किताब सिखाने के कारण और तुम्हारे किताब पढ़ने के कारण । ( सूरा आलेइम्रान ७८ , ७९ )

﴿ يَاأَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنْ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ قَدْ جَاءَكُمْ مِنْ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ(١٥)يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنْ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمْ مِنْ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ(١٦)لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنْ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًاوَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ(١٧) ﴾ (المائدة ١٥-١٧)

ऐ अहले किताब तुम्हारे पास हमारे आख़िरी पैग़म्बर आ गए हैं । जो तुम अल्लाह की किताब ( तौरात ) में से छिपाते थे वह उस में से बहुत कुछ तुम्हें खोल खोलकर बता देते हैं और तुम्हारे बहुत से अपराध को नज़र अन्दाज़ कर देते हैं । बे शक तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से नूर और रौशन किताब आ चुकी है जिस के माध्यम से अल्लाह ऐसे लोगों को नजात का

रासता दिखाता है जो उस की इच्छानुसार काम करते हैं और अपने आदेश से अंधेरे से निकालकर रौशनी की ओर ले जाता है और उन को सीधे रस्ते पर चलाता है। जो लोग यह कहते हैं कि मरयम् का पुत्र ईसा ही अल्लाह है वे बेशक् कुफ्र करते हैं। आप उन से कह दीजिए कि अगर अल्लाह तआला मरयम् के पुत्र मसीह और उस की माता और संसार के सब लोगों को नष्ट करना चाहे तो कौन है जो अल्लाह तआला पर कुछ अधिकार रखता हो ? आसमानों तथा ज़मीन एवं इन दोनों के बीच की कुल चीजें अल्लाह तआला ही के अधीन में हैं वह जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। ( सूरा अल्माइदा १५ , १६ , १७ )
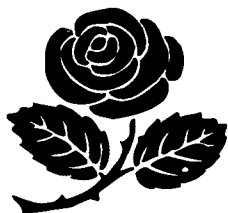
# अध्याय – ५

## हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ की तरफ रसूल भेजे और उन को

﴿ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا(١٦٥) ﴾ (النساء ١٦٥)

ख़ुश्ख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा था ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों के पास अल्लाह के सामने दलील देने का मौक़ा न रहे और अल्लाह ग़ालिब् हिकमत वाला है। ( सूरा निसा १६५ )

## और हमारा ईमान है कि :–

उन में से सब से पहले रसूल हजरत नूह् अलैहिस्सलाम थे और अन्तिम नबी हजरत मुहम्मद ﷺ थे। अल्लाह तआला का फरमान है :–

﴿ إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ ﴾

(النساء ١٦٣)

ऐ मुहम्मद हम ने तुम्हारी तरफ उसी तरह् वह्य ( प्रकाशना) भेजी है जिस तरह् नूह् और उन के बाद वाले रसूलों की तरफ भेजी थी। ( सूरा निसा १६३ )

﴿ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا(٤٠) ﴾ (الأحزاب ٠٤٠)

मुहम्मद तुम्हारे मरदों में से किसी के बाप नहीं हैं बल्कि अल्लाह के रसूल और सब नबियों में सब से आख़िरी नबी हैं। ( सूरा अल्अह्ज़ाब ४० )

और बे शक् हजरत मुहम्मद ﷺ सब से अफ्जल हैं और फिर क्रमप्रकार हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम , हजरत मूसा अलैहिस्सलाम , हजरत नूह अलैहिस्सलाम और हजरत ईसा अलैहिस्सलाम का मुक़ाम ( पद ) और मरतबा है । और यही पाँच पैग़म्बर विशेष रूप से निम्नलिखित आयत में बयान किए गये हैं ।

﴿ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا(٧) ﴾(الأحزاب ٠٠٧)

और जब हम ने सम्पूर्ण पैग़म्बरों से पक्का वचन ( वादा अथवा दृढ़ प्रतिज्ञा ) लिया और तुम से भी और नूह से और मूसा से और मरयम् के पुत्र ईसा से और वादा भी हम ने पक्का लिया । ( सूरा अह्ज़ाब ७ )

**और हमारा ईमान है कि :–** हमारे रसूल ﷺ की शरीअत् विशेष फज़ीलत् वाले उन तमाम रसूलों की शरीअ़तों की तमाम फज़ीलतों को अपने अन्दर समेटे हुये है ।

अल्लाह का फरमान है :–

﴿ شَرَعَ لَكُمْ مِنْ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ (١٣) ﴾ (الشورى ١٣٠)

उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रसता नियुक्त किया है जिस के इख़्तियार करने का नूह़ को आदेश दिया था और जिस की ऐ मुह़म्मद हम ने तुम्हारी तरफ वह़य भेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुकम दिया था। वह यह कि दीन को क़ायम् रखना और उस में फूट न डालना। ( सूरा शूरा १३ )

**और हमारा ईमान है कि :–** तमाम रसूल बशर (मनुष्य) और मख़्लूक़ (सृष्टि) थे। अल्लाह तआला के गुण , विशेषताओं में से कोई भी गुण उन के अन्दर नहीं पाया जाता था। अल्लाह तआला ने प्रथम रसूल हजरत नूह़ का कथन जो उन्हों ने अपनी क़ौम में घोषणा किया था बयान किया है।

﴿ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ ﴾ (هود ٠٣١)

न तो मैं तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न ही यह कि मैं ग़ैब जानता हूँ और न ही यह कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ। ( सूरा हूद ३१ )

और सब से आख़िरी रसूल हजरत मुह़म्मद ﷺ को अल्लाह ने आदेश दिया कि लोगों में एलान कर दें।

﴿ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَى إِلَيَّ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَى وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ(٥٠) ﴾ (الأنعام ٠٥٠)

न तो मैं तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न ही मैं ग़ैब जानता हूँ और न ही तुम से यह कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ। मैं तो केवल वहय की पैरवी करता हूँ। ऐ नबी कह दो क्या अन्धा और देखने वाला दोनों बराबर हो सकते हैं ? पस् तुम सोच विचार क्यों नहीं करते ? ( सूरा अन्आम ५० )
और यह भी फरमा दें कि :-

﴿ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ(١٨٨) ﴾ (الأعراف ١٨٨)

मैं अपनी ज़ात के लिए किसी लाभ या हानि का मालिक नहीं हूँ मगर जो चाहे अल्लाह। और अगर मैं ग़ैब जानता तो अपने लिए सारी भलाइयाँ जमा कर लेता और कभी मुझे कोई हानि पहुँचती ही नहीं। मैं तो केवल डराने वाला और खुश्ख़बरी सुनाने वाला हूँ मोमिनों को। ( सूरा आराफ १८८ )
और फरमा दें कि :-

﴿ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ ﴾ (الجن ٠٢١)

बे शक् मैं तुम्हारे हक् में किसी नुक्सान और नफा का अधिकार नहीं रखता। ( सूरा जिन्न २१ )

**और हमारा ईमान है कि :–** तमाम रसूल अल्लाह के बन्दों में से थे। अल्लाह ने उन्हें रिसालत् ( ईश्दूतत्व ) के पद से सम्मानित किया और उन की तारीफ तथा प्रशसा में उन की बन्दगी (ईश्भक्ति ) के गुण को विशेष रूप से बयान किया है। पहले पैग़म्बर हजरत नूह़ अलैहिस्सलाम के बारे में फरमाया :–

﴿ ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ﴾ (الإسراء ٣٠٠)

ऐ उन लोगों की औलाद जिन को हम ने नूह़ के साथ नाव में सवार किया था। बेशक् नूह़ हमारे शुक्र गुजार बन्दे थे। ( सूरा बनी इस्राईल ३ )

और आख़िरी नबी हजरत मुहम्मद ﷺ के बारे में फरमाया :–

﴿ تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا(١) ﴾ (الفرقان ١٠٠)

अल्लाह बहुत ही बा बरकत है जिस ने अपने बन्दे पर कुरआन नाज़िल् फरमाया ताकि संसार वालों को डराये। ( सूरा फुरक़ान १ )

और अन्य रसूलो के बारे में फरमाया :–

﴿ وَاذْكُرْ عِبَادَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ(٤٥) ﴾ (ص ٤٥٠)

और हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब को याद करो जो शक्तिमान तथा बुद्धिजीवी थे। ( सूरा स्वाद ४५ )

﴿ وَٱذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُۥدَ ذَا ٱلْأَيْدِ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴾ (ص ١٧)

और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो शक्तिमान थे बे शक् वह अल्लाह की ओर रुजूअ् करने वाले थे। ( सूरा स्वाद १७ )

﴿ وَوَهَبْنَا لِدَاوُۥدَ سُلَيْمَـٰنَ نِعْمَ ٱلْعَبْدُ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴾ (ص ٣٠)

और हम ने दाऊद को सुलैमान नामक पुत्र प्रदान किये जो बहुत अच्छे बन्दे थे और वह अल्लाह की ओर रुजूअ करने वाले थे। ( सूरा स्वाद ३० )

और मरयम् के पुत्र ईसा के बारे में फरमाया :-

﴿ إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَـٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴾

वह तो हमारे ऐसे बन्दे थे जिन पर हम ने दया किया और बनी इस्राईल के लिए उन को अपनी कुद्रत् का नमूना बना दिया। ( सूरा ज़ुख़रुफ् ५९ )

**और हमारा ईमान है कि :-** अल्लाह तआला ने मुहम्मद ﷺ पर रिसालत् व नुबूवत् का सिल्सिला समाप्त कर दिया और आप ﷺ को सम्पूर्ण संसार के लिए रसूल बनाकर भेजा। अल्लाह तआला फरमाते हैं :-

﴿ قُلْ يَاأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ(١٥٨) ﴾ (الأعراف ١٥٨)

ऐ मुहम्मद कह दीजिये कि ऐ लोगो मैं तुम सब बी तरफ उस अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ। जिस के लिए आसमान और ज़मीन की बादशाही है। उस के सिवा कोई मअ्बूद नहीं , वही जीवन प्रदान करता है और वही मौत देता है। अतः अल्लाह पर और उस के रसूल नबीए उम्मी पर जो अल्लाह और उस के तमाम कलिमात पर ईमान रखता है। ईमान लाओ और इन की पैरवी करो ताकि हिदायत् पाओ। (सूरा अल्आराफ १५८ )

**और हमारा ईमान है कि :–** रसूलुल्लाह ﷺ की शरीअत् ही इस्लाम धर्म है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए पसन्द फरमाया। और बेशक उस के सिवा अल्लाह तआला के यहाँ किसी का कोई दीन क़बूल नहीं। अल्लाह तआला का फरमान है :–

﴿ إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلۡإِسۡلَٰمُ ۗ ﴾ (آل عمران ١٩)

बेशक् दीन तो अल्लाह के नज़दीक केवल इस्लाम है। ( सूरा आले इम्रान १९ )

और फरमाया :–

﴿ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ﴾ (المائدة ٣)

आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल् कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसन्द किया। ( सूरा अल्माइदा ३ )

और फरमाया :–

﴿ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْـآخِرَةِ مِـنَ الْخَاسِرِينَ(٨٥) ﴾ (آل عمران ٠٨٥)

और जो आदमी इस्लाम धर्म के सिवा कोई अन्य धर्म चाहेगा वह उस से कभी भी स्वीकार नहीं किया जायेगा। और ऐसा आदमी आखिरत में नुक़सान उठाने वालों में से होगा। ( सूरा आलेइम्रान ८५ )

**और हमारा अक़ीदा है कि :–** जो मुसल्मान इस्लाम धर्म के सिवा किसी अन्य धर्म मिसाल के रुप में यहूदीयत् या नस्रानीयत् आदि को क़ाबिले क़बूल और विश्वासनीय समझे वह काफिर है। उसे तौबा के लिए कहा जायेगा अगर वह तौबा कर ले तो बेहतर है वर्ना उसे मुरतद् ( अधर्म ) होने के कारण क़तल् कर दिया जायेगा क्योंकि वह पवित्र क़ुरआन को झुठलाने वाला ठहरा है।

**और हमारा यह भी अक़ीदा है कि :–** जिस आदमी ने मुहम्मद ﷺ की रिसालत् या उस के सम्पूर्ण मानवता के लिए रसूल होने से इनकार किया तो उस ने सभी रसूलों का इन्कार किया। यहाँ तक कि उस रसूल का भी जिस की पैरवी और उसपर ईमान का उसे दावा है। अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ ﴾ (الشعراء ١٠٥)

नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने तमाम रसूलों को झुठलाया। ( सूरा शोरा १०५ )

इस पवित्र आयत् में नूह अलैहिस्सलाम के झुठलाने वालों को तमाम रसूलों का झुठलाने वाला कहा गया है। हालाँ कि नूह अलैहिस्सलाम से पहले कोई रसूल नहीं हुआ।

अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا(١٥٠)أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا(١٥١) ﴾ (النساء ١٥٠-١٥١)

बे शक् जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों का इन्कार करते हैं और अल्लाह तथा उस के पैग़म्बरों में फरक़ करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और ईमान तथा कुफ्र के बीच एक नई राह निकालना चाहते हैं वह निस्सन्देह काफिर हैं और काफिरों के लिए हम ने रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। ( निसा १५० , १५१ )

**और हमारा ईमान है कि :–** हजरत मुहम्मद ﷺ के बाद कोई नबी नहीं और आप ﷺ के बाद जिस किसी ने नुबूवत का दावा किया या किसी नुबूव्वत के दावा करने वाले की तस्दीक़ ( पुष्टि) की और उसे सच्चा समझा तो वह काफिर है क्योंकि वह अल्लाह तआला , उस के रसूल और मुसलमानों के इजमाअ़ ( सहमति ) को झुठलाने वाला ठहरा।

**और हमारा नबीए करीम ﷺ के खुलफाये राशिदीन पर भी ईमान है :–** जो आप ﷺ की उम्मत

में आप ﷺ के बाद ज्ञान , दावत व तब्लीग़ और मोमिनों पर विलायत में आप ﷺ के ख़लीफा बने । और निस्सन्देह हजरत अबू बक्र सिद्दीक़ ही चारों खलीफाओं में सब से अफ्ज़ल् और ख़लीफा बनने के पहले हक़दार थे । फिर क्रमानुसार हजरत उमर बिन ख़त्ताब , हजरत उस्मान बिन अफ्फान और हजरत अ़ली बिन अबी तालिब् ( रजि) का मुक़ाम व मरतबा है । इसी मुक़ाम व मरतबा और फज़ीलत् में तरतीब के मुताबिक् वे क्रमप्रकार ख़ेलाफत् के हक़दार थे ।

अल्लाह तआला की शान ( महिमा ) से यह बात बहुत दूर है – जब कि उस का कोई भी काम हिकमत् से ख़ाली नहीं होता – कि वह ख़ैरुल्कुरून में ( सब से बेहतर ज़माने में ) किसी बेहतर और ख़ेलाफत् के अधिक हक़्दार ब्यक्ति की मौजूदगी में किसी दूसरे ब्यक्ति को मुसलमानों पर मुसल्लत् ( नियुक्त ) कर दे ।

**और हमारा ईमान है कि :–** खुलफाये राशिदीन में से बयान किये गये तरतीब के मुताबिक् बाद वाले ख़लीफा में ऐसे गुण तथा विशेषतायें हो सकती हैं जिन के कारण वह अपने से अफ्ज़ल् ख़लीफा से कुछ चीज़ों में बढ़ा हुआ हो लेकिन इस का यह मत्लब् कदापि नहीं है कि वह अपने से अफ्ज़ल् ख़लीफा पर सारी चीज़ों में फज़ीलत् का हक़्दार है । क्योंकि फज़ीलत् के कारण बहुत सारे और कई प्रकार के हैं ।

## मुहम्मद ﷺ की उम्मत् तमाम उम्मतों से बेहतर है ।

**और हमारा इस पर भी ईमान है कि :–** यह उम्मत तमाम उम्मतों से बेहतर और अल्लाह के यहाँ अधिक

इज़्ज़त व मरतबा तथा फज़ीलत रखती है। इस बारे में अल्लाह तआला का इरशाद है।

﴿ كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ﴾ (آل عمران ١١٠)

मोमिनो जितनी उम्मतें लोगों में पैदा हुईं तुम उन सब से बेहतर हो इस लिए कि तुम नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। ( सूरा आलेइम्रान ११० )

**और हमारा ईमान है कि :–** उम्मत में सब से बेहतर सहाबा किराम (रजि) थे , फिर ताबईन और फिर तबअ् ताबईन ( रहि) और यह कि इस उम्मत में से एक जमाअत् हमेशा हक् पर क़ायम् रहेगी। उन की मुख़लफत् करने वाला या उन्हें बे यार व मदद्गार छोड़ने वाला कोई आदमी उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।

और सहाबये किराम के बीच जो फित्ने ( आपसी मत्भेद ) उत्पन्न हुये उन के बारे में हमारा अक़ीदा यह है कि इज्तिहाद ( सच्चाई की खोज में प्रयतन ) पर आधारित तावील ( विचार ) के कारण सब कुछ हुआ। अत: जिस का इज्तिहाद दुरुस्त था उसे दोहरा अज्र ( सवाब ) मिलेगा और जिस से इज्तिहाद में ग़लती हुई उसे एक ही प्रतिफल् मिलेगा और उस की ग़लती माफ कर दी गई है।

**और हमारा यह भी अक़ीदा है कि :–** उन की नापसन्दीदा ( अप्रिय ) बातों पर आलोचना करने से मुकम्मल तौर पर बचना वाजिब है। केवल उन की बेहतर से बेहतर

प्रशंसा करनी चाहिये जिस के वे मुस्तहिक़् हैं और उन में से हर एक के बारे में हमें अपने दिलों को कीना कपट आदि से पाक रखना चाहिए क्योंकि उन की शान में अल्लाह का फरमान है।

﴿ لَا يَسْتَوِي مِنكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ أُوْلَئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ وَقَاتَلُوا وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَى وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ(١٠) ﴾ (الحديد ١٠)

जिस आदमी ने तुम में से फतहे मक्का से पहले ( मक्का नगर पराजित होने से पहले ) ख़र्च किया और जिहाद किया वह और जिस ने यह काम बाद में किये बराबर नहीं हो सकते। उन का दर्जा उन लोगों से कहीं बढ़कर है जिन्हों ने बाद में माल ख़र्च किया और जिहाद में शरीक हुये और अल्लाह ने सब से सवाब का वादा किया है। ( सूरा अलहदीद १० )
और हमारे बारे में अल्लाह का इरशाद है :-

﴿ وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ(١٠) ﴾ (الحشر ١٠)

और उन के लिए भी जो इन मुहाजिरीन के बाद आये और दुआ करते हैं कि ऐ मेरे रब् हमारे और हमारे भाइयों के जो हम से पहले ईमान लाये हैं गुनाह माफ कर दे और मोमिनों की तरफ से हमारे दिलों में कीना कपट और हसद् न पैदा होने दे। ऐ हमारे रब तू बड़ा दयालू तथा कृपावान है। ( सूरा हश्र १० )

# अध्याय – ६

## क़यामत् पर ईमान

**और आख़िरत के दिन पर हमारा ईमान है :–** और वही क़यामत् का दिन है जिस के बाद कोई दिन नहीं , जब अल्लाह तआला लोगों को दोबारा ज़िन्दा करके उठायेगा , फिर या तो हमेशा के लिए नेमतों वाले घर जन्नत में रहेंगे या दरदनाक अज़ाब वाले घर जहन्नम में ।

**और हमारा मरने के बाद दोबारा जिन्दा किये जाने पर ईमान है :–** यानी हजरत इस्राफील अलैहिस्सलाम जब दोबारा सूर फूँकेंगे तो अल्लाह तआला तमाम मुर्दों को जिन्दा फरमायेगा ।

अल्लाह तआला का फरमान है :–

﴿ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ(٦٨) ﴾(الزمر ٦٨)

और जब सूर फूँका जायेगा तो जो लोग आसमान में हैं और जो ज़मीन में हैं सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे मगर वह जिस को चाहे अल्लाह । फिर दूसरी बार फूँका जायेगा तो फौरन् सब खड़े होकर देखने लगेंगे । ( सूरा ज़ुमर ६८ )

तब लोग अपनी अपनी क़बरों से उठकर परवरदिगारे आलम् की ओर जायेंगे , नङ्गे पावँ बिना जूतों के , नङ्गे बदन बिना कपड़ों और बिना ख़त्ना के होंगे ।

﴿ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ(١٠٤) ﴾ (الأنبياء ١٠٤)

जिस तरह हम ने तमाम मख़्लूक़ात को पहले पैदा किया था उसी प्रकार दो बारा पैदा कर देंगे। यह वादा है जिस का पूरा करना हम पर अनिवार्य है। हम ऐसा जरुर करने वाले हैं। ( सूरा अम्बिया १०४ )

## और हमारा आमाल नामों पर भी ईमांन है कि :-

वे दायें हाथ में दिये जायेंगे या पीठ की ओर से बायें हाथ में। अल्लाह तआला इस विषय में फरमाते हैं :-

﴿ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ(٧)فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا(٨)وَيَنقَلِبُ إِلَى أَهْلِهِ مَسْرُورًا(٩)وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ(١٠)فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا(١١)وَيَصْلَى سَعِيرًا(١٢) ﴾ (الانشقاق ٧٠٠-١٢٠)

तो जिस का नामये आमाल उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा उस से आसान हिसाब लिया जायेगा और वह अपने घर वालों में खुश होकर लौटेगा और जिस का नामये आमाल उस की पीठ की ओर से दिया गया वह हेलाकत ( मौत ) को पुकारेगा और भड़कती हुई आग में दाखि़ल होगा। ( सूरा इन्शिक़ाक़ ७ , १२ ) और फरमाया :-

﴿ وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا(١٣)اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا(١٤) ﴾ (الإسراء ٠١٣-٠١٤)

और हम ने हर आदमी का नामये आमाल उस के गले में लटका दी है और क़यामत के दिन एक किताब के रूप में उसे निकाल दिखायेंगे जिसे वह खुला हुआ देखेगा। कहा जायेगा कि अपनी किताब पढ़ ले तू आज अपना हिसाब आप ही करने के लिए काफी है। ( सूरा इस्रा १३ , १४ )

**और नेकियाँ तथा बुराइयाँ तौलने वाले मीज़ान ( तराजू ) पर भी हमारा ईमान है कि :–** क़यामत के दिन वह क़ायम् किये जायेंगे , फिर किसी जान पर कोई जुलम न होगा।

﴿ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَه(٧)وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَه(٨) ﴾ (الزلزلة ٠٠٧-٠٠٨)

तो जिस ने एक कण के बराबर भी नेकी की होगी वह उस को देख लेगा और जिस ने एक कण बराबर बुराई की होगी वह उसे देख लेगा। ( सूरा ज़िजला )

﴿ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُوْلَئِكَ هُمْ الْمُفْلِحُونَ(١٠٢)وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُوْلَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ

خَالِدُونَ(١٠٣)تَلْفَحُ وُجُوهَهُمْ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَـالِحُونَ(١٠٤) ﴾

(المؤمنون ١٠٢-١٠٤)

तो जिन के कर्मों के बोझ भारी होंगे वह कामियाब होने वाले हैं और जिन के अमलों का वज़न् हल्का होगा वे ऐसे लोग हैं जिन्हों ने अपने आप को घाटे और टूटे में डाला वे हमेशा जहन्नम में रहेंगे। आग उन के चेहरों को झुलस् देगी और वे उस में बद्शकल् होंगे। ( सूरा अल्मूमिनून १०२ , १०४ )

﴿ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ(١٦٠) ﴾ (الأنعام ١٦٠)

जो आदमी नेक काम करेगा उस को उस के दस गुना मिलेंगे और जो आदमी बुरा काम करेगा उस को उस के बराबर ही सज़ा मिलेगी। ( सूरा अन्आम १६० )

**और हमारा ईमान है कि :–** शफाअते कुबरा ( विस्तार पूर्वक तथा बड़ी सिफारिश ) का पद तथा सम्मान विशेष रूप से रसूलुल्लाह ﷺ को प्राप्त होगा।

जब लोग असहनीय दु:ख और तक्लीफ में ग्रस्त होंगे तो पहले हजरत आदम फिर क्रमप्रकार हजरत नूह़ , हजरत इब्राहीम , हजरत मूसा , हजरत ईसा अलैहिमुस्लाम और आख़िर में हजरत मुह़म्मद रसूलुल्लाह ﷺ के पास जायेंगे तो आप ﷺ अल्लाह की इजाज़त् से उस के यहाँ सिफारिश फरमायेंगे ताकि अल्लाह तआला उन के बीच फैसला फरमा दे।

**और हमारा ईमान है कि :–** जो मोमिन अपने गुनाहों के कारण जहन्नम् में दाख़िल हो जायेंगे उन को वहाँ से

निकालने के लिए भी सिफारिश् होगी और इस का एजाज़ ( सम्मान ) रसूलुल्लाह ﷺ और आप के अतिरिक्त अन्य नबियों , मोमिनों तथा फरिश्तों को भी प्राप्त होगा ।
और अल्लाह तआला मोमिनों में से कुछ लोगों को बिना सिफारिश के केवल अपनी रहमत् और विशेष दया , कृपा से जहन्नम से निकाल लेगा ।

**और हम रसूलुल्लाह ﷺ के हौज ( हौजे कौसर ) पर भी ईमान रखते हैं** । उस का पानी दूध से अधिक सफेद और बरफ् से अधिक ठन्ढा , शहद् से अधिक मीठा और कस्तूरी से बढ़कर खूश्बूदार होगा । उस की लम्बाई और चौड़ाई एक एक महीने की दूरी के बराबर होगी , और उस के प्याले खूबसूरती और तादाद में आसमान के सितारों के समान होंगे । वह मैदाने महशर में होगा उस में जन्नत की नहर कौसर से दो परनाले आकर गिरेंगे । उम्मते मुहम्मदिया के ईमान वाले वहाँ से पानी पियेंगे जिस ने वहाँ से एक बार पी लिया उसे कभी प्यास न लगेगी ।

**और हमारा ईमान है कि :–** जहन्नम पर पुल्सिरात स्थापित किया जायेगा , लोग अपने अपने कर्मानुसार उस पर से गुजरेंगे । पहले दर्जे के लोग बिजली की चमक की तरह गुज़र जायेंगे , फिर क्रमप्रकार कुछ हवा की सी तेज़ी से और कुछ परिन्दों की तरह और कुछ तेज़ दौड़ते हुये गुज़रेंगे और नबीए अकरम ﷺ पुल्सिरात पर खड़े होकर दुआ फरमा रहे होंगे । ऐ रब् इन्हें सलामत् रख यहाँ तक कि लोगों के आमाल ( कर्म ) पुल्सिरात पर से गुज़रने के लिए नाकाफी और आजिज् रह जायेंगे तो वे पेट के बल् रेंगते हुये गुज़रेंगे । और पुलेसिरात

के दोनों तरफ कुन्डियाँ लटकती होंगी जिस के बारे में उन्हें आदेश होगा उसे पकड़ लेंगी , कुछ लोग तो उन की ख़राशों से ज़ख़्मी होकर नजात पा जायेंगे और कुछ जहन्नम में गिर पड़ेंगे ।

और क़ुरआन व ह़दीस में उस दिन की जो ख़बरें और हौल नकियाँ बयान की गईं हैं हमारा उन सब पर ईमान है , अल्लाह तआला उन में हमारी मदद् फरमाए ।

**और हमारा ईमान है कि :-** रसूलुल्लाह ﷺ जन्नतियों के जन्नत में दाख़िला के लिए भी सिफारिश् फरमायेंगे और उस का सम्मान भी विशेष रूप से आपﷺ को ही प्राप्त होगा ।

## जन्नत और जहन्नम पर भी हमारा ईमान है ।

जन्नत दारुन्नई़म ( नेमतों का घर है ) जिसे अल्लाह तआला ने अपने परहेज़गार और मोमिन बन्दों के लिए तैयार किया है , उस में ऐसी ऐसी नेमतें हैं जो किसी आँख ने न तो देखी हैं , न किसी कान ने सुना है और न ही किसी मनुष्य के दिल में उन का ख़याल ही आया है । अल्लाह तआला फरमाते हैं :-

﴿ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ(١٧) ﴾ (السجدة ١٧٠)

कोई प्राणी नहीं जानता कि उन के लिए आँखों की कैसी ठन्ढक छुपाकर रखी गई है । ये उन कर्मों का प्रतिफल है जो वे करते रहे । ( सूरा सजदा १७ )

और जहन्नम अज़ाब का घर है जिसे अल्लाह ने काफिरों और ज़ालिमों के लिए तैयार कर रखा है । वह ऐसा अज़ाब और दुःख

दायी सज़ायें हैं जिन का दिल पर कभी खटका भी नहीं गुज़रा। अल्लाह तआला फरमाते हैं।

﴿ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا(٢٩) ﴾ (الكهف ٢٩ .)

हम ने ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है। जिस की क़नातें उन को घेर रही होंगी और अगर फरयाद करेंगे तो ऐसे खौलते हुये गरम पानी से उन की मेहमानी की जायेगी जो पिघले हुए ताँबे की तरह होगा और चेहरों को भून डालेगा। उन के पीने का पानी भी बुरा और रहने की जगह ( निवास स्थान ) भी बुरी। ( सूरा अल्कहफ् २९ )

और जन्नत तथा जहन्नम इस समय भी मौजूद हैं और हमेशा हमेश रहेंगे। कभी समाप्त नहीं होंगे। अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا(١١) ﴾ (الطلاق ١١ .)

और जो आदमी ईमान लायेगा और नेक अमल ( कर्म ) करेगा अल्लाह उन्हें जन्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा उन में रहेंगे अल्लाह ने उन की रोज़ी खूब बनाया है। ( सूरा तलाक़ ११ )

﴿ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا(٦٤)خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا(٦٥)يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُـــونَ يَالَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ(٦٦) ﴾ (الأحزاب ٦٤-٠٦٦)

बे शक् अल्लाह ने काफिरों पर लानत् की है और उन के लिए भड़कती हुई आग ( जहन्नम ) तैयार कर रखी है । उस में हमेशा हमेश रहेंगे । न किसी को दोस्त पायेंगे न मदद्गार । जब उन्हें औंधे मुँह जहन्नम में डाला जायेगा तो वे कहेंगे ऐ काश ! हम अल्लाह की फरमाँबरदारी करते और रसूल का हुकम मानते । ( सूरा अह्ज़ाब ६४ , ६५ , ६६ , )

और हम उन सब लोगों के जन्नती होने की गवाही देते हैं जिन के लिए कुरआन व हदीस ने नाम लेकर या उन के गुणों को बयान करके जन्नत की शहादत् दी है ।

जिन के नाम लेकर उन्हें जन्नत की शहादत् मिली है उन में हजरत अबू बक्र सिद्दीक़ , हजरत उमर , हजरत उस्मान और हजरत अली रजियल्लाहु अन्हुम् के सिवा कुछ और हजरात भी शामिल् हैं जिन को रसूलुल्लाह ﷺ ने जन्नती कहा है । और जन्नतियों के गुणों के आधार से हर मोमिन और मुत्तक़ी के लिए जन्नत की शहादत् है ।

और इसी प्रकार हम उन सब लोगों के जहन्नमी होने की गवाही देते हैं जिन का नाम लेकर या गुण बयान करके कुरआन व हदीस ने उन्हें जहन्नमी घोषित किया है । अतः अबू लहब् , अमर बिन लुहै और इस प्रकार के अन्य लोगों का नाम लेकर जहन्नमी घोषित किया गया है , और जहन्नमियों के गुणों

के आधार से हर काफ़िर और मुश्रिक् और मुनाफ़िक़् के लिए जहन्नम की शहादत् है ।

और हम क़ब्र की आज़माइश् तथा परिक्षा पर भी ईमान रखते हैं । इस से मुराद वह प्रश्न हैं जो मुर्दे से उस के रब् , दीन और नबी के बारे में होंगे ।

﴿ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ (٢٧) ﴾ (إبراهيم ٢٧٠)

अल्लाह मोमिनों को पक्की बात पर दुनिया की ज़िन्दगी में भी साबित् क़दम् रखता है और आख़िरत में भी रखेगा । ( सूरा इब्राहीम २७ )

मोमिन तो कहेगा कि मेरा रब् अल्लाह , मेरा दीन इस्लाम और मेरे नबी मुहम्मद ﷺ हैं । मगर काफ़िर और मुनाफ़िक़् जवाब देंगे । मैं नहीं जानता , मैं तो जो कुछ लोगों को कहते सुनता , कह देता था ।

**हमारा ईमान है कि :–** क़ब्र में मोमिनों को नेमतों से नवाज़ा जायेगा ।

﴿ الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (٣٢) ﴾ (النحل ٣٢٠)

जब फ़रिश्ते उन लोगों की जानें निकालते हैं जो कुफ़्र तथा शिर्क से पाक साफ होतो हैं । तो फ़रिश्ते उन से सलाम कहते हैं और यह भी शुभ सूचना देते हैं कि जो अमल ( कर्म ) तुम दुनिया में करते थे उन के कारण तुम जन्नत में दाख़िल् हो जाओ । ( सूरा नहल ३२ )

और ज़ालिमों तथा काफिरों को क़ब्र में अज़ाब होगा। अल्लाह तआला फरमाते हैं :- .

﴿ وَلَوْ تَرَى إِذْ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمْ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ(٩٣) ﴾

(الأنعام ٩٣)

और काश तुम ज़ालिम् लोगों को उस समय देख सको जब वे मौत की सख़्तियों में होते हैं और फरिश्ते उन के प्राण निकालने के लिए उन की ओर हाथ बढ़ाते हुये कहते हैं, आज तुम्हें रुस्वा करने वाला अज़ाब तथा सज़ा मिलेगी। इस कारण कि तुम अल्लाह पर झूठ बोला करते थे और उस की आयतों से सरकशी करते थे। ( सूरा अन्आम ९३ )

और इस बारे में बहुत सारी हदीसें भी प्रसिद्ध तथा मश्हूर हैं। इस लिए ईमान वालों पर अनिवार्य है कि उन ग़ैबी बातों के बारे में जो कुछ क़ुरआन व ह़दीस में आया है उस पर बिला चूँ व चिरा ( बिना अस्मन्जस् तथा दुविधा ) ईमान लायें, और संसारिक दृश्यों पर अनुमान करके इन से मतभेद तथा उलङ्घन न करें। क्योंकि आख़िरत् वाली बातों तथा कर्मों का अनुमान तथा तुलना संसारिक बातों तथा कामों पर करना दुरुस्त नहीं क्योंकि दोनों के बीच बहुत अन्तर है।

# अध्याय – ७

## तक़्दीर पर ईमान

और हम तक़्दीर की भलाई एंव बुराई पर ईमान रखते हैं और वह सम्पूर्ण संसार के बारे में पहले से अल्लाह के ज्ञान और हिकमत् ( युक्ति ) अनुसार है ।
और तक़्दीर की चार श्रेणियाँ ( दर्जे ) हैं ।

## १ . ज्ञान

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला हर चीज़ के बारे में जो हो चुका है और जो होगा और जिस तरह होगा सब कुछ अपने अज़ली ( हमेशा से रहने वाले ज्ञान ) के द्वारा जानता है । उस का ज्ञान नौ पैद नहीं है जो बेइल्मी ( अज्ञानता ) के बाद प्राप्त हो और न ही उस से भूल चूक होती है । यानी न उस के ज्ञान का कोई आरम्भ है और न ही अन्त ।

## २ . लिखना ( लिपिबद्ध करना )

हमारा ईमान है कि क़यामत तक जो कुछ होने वाला है अल्लाह ने लौहे महफ़ूज़ में लिख रखा है । अल्लाह फरमाते हैं :–

﴿ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ (٧٠) ﴾ (الحج ٧٠)

क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह उस को जानता है। ये सब कुछ किताब ( लौहे महफ़ूज़ ) में लिखा हुआ है। ये सब अल्लाह के लिए आसान है। ( सूरा हज ७० )

## ३ . मशीअत् ( अल्लाह का इरादा )

हमारा ईमान है कि जो कुछ आसमान व ज़मीन में है सब अल्लाह की इच्छा से उत्पन्न होती हैं , कोई भी चीज़ उस की इच्छा के बिना नहीं होती। अल्लाह तआला जो चाहता है वह हो जाता है और जो नहीं चाहता वह नहीं होता।

## ४ . तख़लीक़ ( पैदा करना )

हमारा ईमान है कि :-

﴿ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ(٦٢)لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُوْلَئِكَ هُمْ الْخَاسِرُونَ(٦٣) ﴾ (الزمر ٠٦٢-٠٦٣)

अल्लाह तआला ही हर चीज़ को पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का रक्षक है। और उसी के पास आसमानों तथा ज़मीन की कुन्जियाँ हैं। ( सूरा ज़ुमर ६२ , ६३ )
और इन तक़दीर के दरजात ( श्रेणियों ) में वह सब कुछ शामिल है जो स्वंय अल्लाह तआला की तरफ से होता है और जो बन्दों की तरफ से होता है। और बन्दों से जो भी बातें एवं कर्म उत्पन्न होते हैं या जिन कामों को वे छोड़ देते हैं , वह सब के सब अल्लाह के इलम में , उस के पास लिखे हुये हैं।

अल्लाह की इच्छा ने उन का तक़ाज़ा किया और अल्लाह ने उन्हें पैदा फरमाया।

﴿ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ(٢٨)وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ(٢٩) ﴾

(التكوير ٢٨۔٢٩)

यानी उस के लिए जो तुम में से सीधी चाल चलना चाहे और तुम्हारे चाहने से कुछ भी नहीं होगा मगर यह कि चाहे अल्लाह रब्बुल् आलमीन। ( सूरा तक्वीर २८ , २९ )

﴿ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلُوا۟ وَلَـٰكِنَّ ٱللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾ ﴾ (البقرة ٢٥٣)

और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग आपस में लड़ाई न करते लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है। ( सूरा बक़रा २५३ )

﴿ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾ ﴾ (الأنعام ١٣٧)

और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। तू उन को छोड़ दे कि वे जानें और उन का झूठ। ( सूरा अन्आम १३७ )

﴿ وَٱللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ ﴾ (الصافات ٩٦)

हालाँ कि तुम को और जो कुछ तुम करते हो उस को अल्लाह ही ने पैदा किया है। ( सूरा साफात ९६ )

लेकिन इस के साथ साथ हमारा यह भी ईमान है कि अल्लाह तआला ने बन्दे को अधिकार और क़ुदरत् से नवाज़ा है। बन्दा जो करता है उस अधिकार और क़ुद्रत् के आधार पर ही करता है। और बहुत से ऐसे काम हैं जो इस बात की दलील हैं कि बन्दे का काम उस के अधिकार और शक्ति से प्रकट होता है।

१. अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :–

﴿ نِسَآؤُكُمۡ حَرۡثٞ لَّكُمۡ فَأۡتُواْ حَرۡثَكُمۡ أَنَّىٰ شِئۡتُمۡ ﴾ (البقرة ٢٢٣)

औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं , अतः अपनी खेती में जिस प्रकार चाहो आओ । ( सूरा बक़रा २२३ )
और फरमाया :-

﴿ ۞ وَلَوۡ أَرَادُواْ ٱلۡخُرُوجَ لَأَعَدُّواْ لَهُۥ عُدَّةً ﴾ (التوبة ٤٦)

और अगर वे निकलने का इरादा करते तो उस के लिए सामान तैयार करते । ( सूरा तौबा ४६ )
पहली आयत् में आने को बन्दे की इच्छा पर और दूसरी आयत् में तैयारी को उस के इरादे पर मौकूफ ( निर्भर ) रखा है ।
२ . बन्दे को अल्लाह ने अच्छे कामों के करने का और बुरे कामों से दूर रहने का आदेश दिया है , और इस का कार्यभार उस को सौंपा है तथा उसे इस का उत्तरदायित्व ठहराया है , यदि उस के पास अधिकार तथा कुद्रत् न होते तो यह कार्यभार सौंपना ब्यर्थ होता और मानो कि उसे ऐसी चीज़ों की जिम्मेदारी सौंपी गई है जिस की वह ताक़त् नहीं रखता । और यह एक ऐसी बात है जो अल्लाह की हिकमत् , रह्मत् और उस की ओर से आने वाली सच्ची ख़बर के प्रतिकूल है । जब कि अल्लाह का फरमान है :-

﴿ لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفۡسًا إِلَّا وُسۡعَهَا ﴾ (البقرة ٢٨٦)

अल्लाह तआला किसी आदमी को उस की ताक़त् से अधिक जिम्मेदारी नहीं सौंपता । ( सूरा बक़रा २८६ )
३ . नेकी करने वाले की नेकी पर तारीफ , बुराई करने वाले की बुराई पर निन्दा और दोनों को उन के काम अनुसार

प्रतिफल का वादा भी इस बात की दलील है कि बन्दा मज्बूर ( विवश ) नहीं बल्कि मुख़्तार ( स्वाधीन ) है ।
अगर बन्दे का कर्म उस के अधिकार और इरादे से प्रकट न होता हो तो नेकी करने वालों की प्रशंसा करना ब्यर्थ होता और बुरे आदमी को दण्ड देना अत्याचार होता और अल्लाह तआला ब्यर्थ कामों तथा अत्याचार करने से पाक तथा पवित्र है ।
४. अल्लाह तआला ने रसूल भेजे जिन का उद्देश्य यह है कि :-
﴿ رُسُلًا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا(١٦٥) ﴾ (النساء ١٦٥)
सब रसूलों को अल्लाह ने खुश्ख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा ताकि रसूलों के आने के बाद लोगों को अल्लाह के सामने दलील देने का मौक़ा न रहे । ( सूरा निसा १६५ )
और अगर बन्दे का कर्म उस के अधिकार और इरादा में न होता तो रसूल भेजने से उस की दलील ब्यर्थ न होती ।
५. हर काम करने वाला आदमी काम करते समय या उसे छोड़ते समय अपने आप को हर प्रकार के प्रभाव तथा दबाव से आज़ाद महसूस करता है । आदमी केवल अपनी इच्छा से उठता , बैठता , आता जाता और यात्रा करता है तथा नहीं भी करता है उसे इस बात का कोई अनुभव तथा आभास नहीं होता कि कोई उसे इस काम पर मजबूर कर रहा है । बल्कि वास्तव में वह उन कामों में जो अपनी इच्छा से या किसी के मजबूर करने से करता है दोनों में अन्तर को समभ सकता है । ऐसे ही शरीअत् ने भी आदेशों के आधार से इन दोनों प्रकार के कामों तथा कर्मों में अन्तर किया है । इसी लिए मनुष्य अल्लाह तआला

के हुकूक़ ( अधिकार ) से सम्बन्धित जो काम मजबूर होकर कर गुज़रे उस पर कोई पकड़ नहीं है ।
हमारा अक़ीदा है कि पापी को अपने पाप पर तक़्दीर से प्रमाण पकड़ने का कोई हक़ नहीं है । क्योंकि वह पाप करते समय स्वतन्त्र तथा स्वाधीन होता है और उसे इस के सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं होता कि अल्लाह तआला ने उस के लिए उस की तक़्दीर में यही लिख रखा है क्योंकि किसी कार्य के होने से पहले तो अल्लाह की तक़्दीर को कोई भी नहीं जान सकता ।

﴿ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ﴾ (لقمان ٣٤)

और कोई आदमी नहीं जानता कि कल् वह क्या करेगा ।
फिर जब आदमी कोई काम करते समय प्रमाण को जानता ही नहीं तो फिर उज़्र ( कारण ) पेश करते समय उस से दलील क्योंकर पकड़ सकता है , और निस्सन्देह अल्लाह तआला ने इस प्रमाण को असत्य तथा व्यर्थ कहा है ।

﴿ سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّى ذَاقُوا بَأْسَنَا قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ(١٤٨) ﴾ (الأنعام ١٤٨)

जो लोग शिर्क करते हैं वे कहेंगे कि अगर अल्लाह तआला चाहता तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप दादा शिर्क करते , और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते , इसी प्रकार उन लोगों ने भी झूठी बातें बनाई थी जो इन से पहले थे यहाँ

तक कि हमारे अज़ाब का मज़ा चख्कर रहे। कह दो क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाण है ? यदि है तो उसे हमारे सामने निकालो। तुम केवल विचारों तथा ख़यालों के पीछे चलते हो और अटकल् बाजी करते हो। ( सूरा अनआम १४८ )

## ❁ और हम तक़दीर को प्रमाण तथा आधार बनाकर गुनाह करने वालों से कहेंगे :-

आप नेकी और आज्ञापालन की ओर क़दम क्यों नहीं बढ़ाते ? यह मानते हुये कि अल्लाह तआला ने आप की तक़दीर में यही लिखा है। पुण्य तथा पाप में इस आधार से कोई अन्तर नहीं है बल्कि कर्म प्रकट होने से पहले अज्ञानता में आप के लिए दोनों बराबर हैं। इसी लिए रसूलुल्लाह ﷺ ने जब सहाबा किराम को यह ख़बर दी कि तुम में से हर एक का जन्नत और जहन्नम में ठेकाना निश्चित कर दिया गया है तो उन्हों ने प्रश्न किया कि आया हम अमल ( कर्म ) छोड़कर के उसी पर भरोसा न कर लें ? आप ﷺ ने फरमाया :- नहीं , क्योंकि जिस को जिस ठेकाने के लिए पैदा किया गया है उसी के कार्य की क्षमता उसे प्रदान किया जाता है।

## ❁ और अपने पाप पर तक़दीर से प्रमाण पकड़ने वाले से कहेंगे कि :-

अगर आप का मक्का के लिए सफर का इरादा हो , और उस के दो रासते हों , आप को कोई विश्वासनीय आदमी ख़बर दे कि एक रासता उन में से ख़तरनाक और कष्टदायक है , और दूसरा आसान तथा शान्तिपूर्ण है तो अवश्य आप दूसरा रासता ही अपनायेंगे और यह असम्भव है कि यह कहते हुये पहले वाले भयङ्कर तथा ख़तरनाक रासते पर चल निकलें कि मेरी तक़दीर

में तो यही लिखा हुआ है। अगर आप ऐसा करेंगे तो आप की गिन्ती दीवानों तथा पागलों में होगी।

## ❁ और हम उस से यह भी कहेंगे कि :-

अगर आप को दो नोकरियों की पेशकश् की जाये उन में से एक की तन्ख़ाह ज़्यादा हो तो आप कम तन्ख़ाह के बजाये ज़्यादा तन्ख़ाह वाली नोकरी को प्राथमिकता देंगे तो फिर आख़िरत के कामों के विषय में आप क्योंकर कम मज़दूरी का चयन करते हैं और फिर तक़दीर को प्रमाण बनाते हैं।

## ❁ और हम उस से यह भी कहेंगे कि :-

जब आप किसी शरीरिक रोग में ग्रस्त होते हैं तो अपने उपचार के लिए हर डाकटर के दरवाज़े पर दस्तक देते हैं। आपरेशन् की तकलीफ पूरे सब्र से बरदाशत करते हैं, कड़वी दवा को धैर्य के साथ सेवन करते हैं तो फिर अपने दिल पर पापों के रोग़ के हमले ( आक्रमण ) की सूरत् में आप ऐसा क्यों नहीं करते ?

और हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला की कमाले रह़मत् एवं ह़िकमत् के पेशे नज़र शर् ( बुराई ) की निस्बत् उस की तरफ नहीं की जाती। रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया (( وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ )) और शर् ( बुराई ) तेरी तरफ मन्सूब नहीं है। ( मुस्लिम )
अल्लाह की क़ज़ा ( निर्णय ) में कभी शर् ( बुराई ) नहीं हो सकता क्योंकि वह उस की रह़मत् और ह़िकमत् से प्रकट होती है। बल्कि उस के परिणाम में शर् ( बुराई ) होता है जो बन्दों से उत्पन्न होते हैं।

हजरत ह़सन ( रजि ) को आप ﷺ ने जो दुआये क़ुनूत सिखाई उस में आप ﷺ का फरमान है :- (( وَقِنِيْ شَرَّ مَا قَضَيْتَ ))

मुझे अपने निर्णय किये हुए चीज़ के शर् से महफूज़ रख। इस में शर् की निस्बत् निर्णय के नतीजा ( परिणाम ) की तरफ है और फिर परिणाम में भी केवल और ख़ालिस् शर् नहीं है बल्कि वह भी एक आधार से शर् होता है तो दूसरे आधार से ख़ैर ( भलाई ), और एक स्थान पर वह शर ( बुराई ) नज़र आता है तो दूसरे स्थान पर वही ख़ैर ( भलाई ) महसूस होती है। मिसाल के रूप में अकाल, बीमारी, फक़ीरी और भय आदि तमाम चीजें ज़मीन में उपद्रव हैं लेकिन दूसरे स्थान पर यही चीज़ें ख़ैर व भलाई हैं। अल्लाह तआला फरमाते हैं :-

﴿ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُــذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ(٤١) ﴾ (الروم ٠٤١)

खुश्की और तरी में लोगों के कर्मों के कारण फसाद फैल गया है ताकि अल्लाह उन को उन के कुछ कुकर्मों का मज़ा चखाये, ताकि वे बुरे कर्मों से रुक जायें। ( सूरा रुम ४१ )

और चोर को हाथ काटने की सज़ा, शादी शुदा बद्कार को रजम ( सङ्गसारी ) की सज़ा, चोर और ज़ानी के लिए तो शर् है क्योंकि एक का हाथ नष्ट होता है और दूसरे की जान जाती है। लेकिन एक आधार से तो यह उन के लिए भी ख़ैर है क्योंकि इस से गुनाह समप्त होते हैं और अल्लाह तआला उन के लिए दुनिया तथा आख़िरत की सज़ा जमा नहीं फरमाते, और दूसरे स्थान पर यह इस आधार से ख़ैर है कि इस से लोगों के मालों, इज़्ज़तों और नसबों की हिफाजत् होती है।

# अध्याय – ८

## इन अक़ीदों के प्रतिफल तथा लाभ

इन महान नियमों पर आधारित यह उच्च स्तर का अक़ीदा अपने अन्दर अपने मानने वालों ( श्रद्धालुओं ) के लिए बहुत से विशाल तथा श्रेष्ठ प्रतिफल एवं लाभ रखता है।

इस लिए अल्लाह तआला की ज़ात और उस के नामों तथा विशेषताओं पर ईमान रखने से बन्दे के दिल में अल्लाह की मोहब्बत् तथा आदर सम्मान की भावना पैदा होती है, जिस के परिणाम में वह अल्लाह तआला के आदेशों के पालन के लिए तैयार रहता है और जिन चीज़ों से अल्लाह ने मना किया है उन से बचता है। अल्लाह के आदेशों का पालन करना और जिन चीज़ों से अल्लाह ने रोका है उन से रुकना ही आदमी और समाज के लिए दुनिया तथा आख़िरत में पूर्ण कामियाबी है। अल्लाह तआला फरमाते हैं :–

﴿ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنثَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ(٩٧) ﴾ (النحل ٩٧)

जो आदमी नेक कर्म करेगा मर्द हो या औरत और वह मोमिन भी हो तो हम उस को दुनिया में पाक और आराम की जीवन से ज़िन्दा रखेंगे और आख़िरत में उन के कर्मों का बहुत ही अच्छा प्रतिफल देंगे। ( सूरा नहल ९७ )

## फरिश्तों पर ईमान के प्रतिफल तथा लाभ

१. उन के ख़ालिक् की अज़्मत् , शक्ति और हर चीज़ पर अधिकार का ज्ञान ।

२. अल्लाह तआला की अपने बन्दों के साथ विशेष कृपा एवं दया पर उस का धन्यवाद , जब कि उस ने उन फरिश्तों को बन्दों पर नियुक्त कर रखा है जो उन की हिफाजत् करते और उन के कामों को लिखते रहते हैं और इस के अतिरिक्त अन्य कामों की जिम्मेदारी भी उन के ऊपर है ।

३. इस से फरिश्तों के प्रति प्रेम की भावनायें पैदा होती हैं , क्योंकि वे अल्लाह की इबादत उत्तम तरीक़े से बजा लाते हैं और मोमिनों के लिए इस्तिग़फार ( क्षमा़याचना ) करते हैं ।

## किताबों पर ईमान के लाभ तथा प्रतिफल

१. मख़लूक़ के साथ अल्लाह की रह़मत् और विशेष कृपा का ज्ञान जब कि अल्लाह तआला ने हर समुदाय के लिए एक किताब नाज़िल फरमाई जो उन्हें सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है ।

२. अल्लाह तआला की हिकमत् प्रकट होती है कि अल्लाह ने उन किताबों में हर उम्मत के लिए उन की स्थिती अनुसार शरीअत् ( धर्मशास्त्र ) नाज़िल की और उन में से आख़िरी किताब महान क़ुरआन है जो क़यामत् तक हर ज़माने और हर जगह में पूरी मख़लूक़ के लिए मुनासिब तथा लाभदायक है ।

३. अल्लाह तआला की इस नेमत तथा अनुकम्पा पर धन्यवाद ।

## अल्लाह तआला के रसूलों पर ईमान के प्रतिफल

१. अल्लाह तआला की अपनी मख़लूक़ के साथ विशेष कृपा तथा अनुकम्पा का ज्ञान । जब कि उस ने हिदायत तथा

मार्गदर्शन के लिए उन की ओर आदरणीय तथा सम्माननीय रसूल भेजे।

२. अल्लाह तआला की इस विशाल तथा महान नेमत् पर उस की शुक्र गुज़ारी।

३. रसूलों से प्रेम उन की इज़्ज़त और उन के लायक़् तारीफ तथा प्रशंसा, क्योंकि वे अल्लाह तआला के रसूल हैं, उस के बन्दों में सब से महान तथा श्रेष्ठ हैं, जिन्हों ने अल्लाह की इबादत्, उस की ओर से सन्देश पहुँचाने में तथा उस के बन्दों की ख़ैर ख़्वाही, भलाई और उपकार का कार्यभार अच्छी तरह निभाया और इस रासते में पहुँचने वाली तकलीफ पर सब्र किया।

## आख़िरत के दिन पर ईमान के प्रतिफल

१. अल्लाह तआला की इबादत तथा आज्ञापालन का अत्यन्त शौक़् ( अभिलाषा ), उस दिन के लिए सवाब प्राप्त करने की रुचि और उस दिन में अज़ाब के भय से अल्लाह की नाफरमानी से रुक जाना।

२. दुनिया की नेमतों और उस के साज़ व सामान में से जिसे आदमी प्राप्त नहीं कर पाता, मोमिन के लिए तसल्ली का कारण है कि उसे आख़िरत् की नेमतों और अज्र व सवाब के रूप में उस के अच्छे प्रतिकार की आशा होती है।

## तक़दीर पर ईमान के प्रतिफल

१. अस्बाब तथा माध्यम को काम में लाते हुये अल्लाह तआला पर भरोसा करना। क्योंकि सबब् ( कारण ) और उस का नतीजा ( परिणाम ) दोनों अल्लाह तआला के निर्णय तथा तक़दीर पर निर्भर है।

२. प्राकृतिक सुख और हृदय सन्तोष । क्योंकि जब यह मालूम हो जाता है सब कुछ अल्लाह की क़ज़ा ( निर्णय ) का नतीजा है और अप्रिय काम भी अवश्य होकर रहेगा तो तबीअत् एक प्रकार से सुख, शान्ति महसूस करने लगती है और दिल सन्तुष्ट और मुत्मइन् होकर अपने परवरदिगार की क़ज़ा पर राज़ी हो जाता है । जो आदमी तक़्दीर पर ईमान ले आता है उस से बढ़कर सुखप्रद जीवन , प्राकृतिक सुख चैन, शान्ति और हृदय सन्तोष किसी को प्राप्त नहीं होता ।

३. उद्देश्य प्राप्त होने पर अपने बारे में खुशफह्मी में मुब्तला न होना क्योंकि इस नेमत की प्राप्ति अल्लाह तआला की ओर से और तक़्दीर में कामियाबी व ख़ैर के अस्बाब की बिना पर हुआ है । इस लिए आदमी इस पर अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करता और खुश् फह्मी से रुक जाता है ।

४. किसी अप्रिय चीज़ के प्रकट होने या उद्देश्य व मक़्सद् के समाप्त हो जाने पर बे चैनी व ब्याकुलता से छुटकारा । क्योंकि वह उस अल्लाह तआला का फैसला है जो आसमानों और ज़मीन का बादशाह है और वह बहर हाल नाफिज़् होकर रहेगा । तो आदमी इस पर सब्र करता है और अज्र व सवाब्र का तलब्गार होता है । और निम्नलिखित आयत् में इसी की तरफ इशारा है ।

﴿ مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ(٢٢)لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ(٢٣)﴾

(الحديد ٢٢-٢٣)

कोई मोसीबत् संसार में या खुद तुम पर नहीं पड़ती मगर पूर्व इस के कि हम उस को पैदा करें एक किताब में लिखी हुई है। निस्सन्देह यह अल्लाह को आसान है ताकि जो कुछ तुम से चूक हो गया हो उस का ग़म न खाया करो और जो तुम को उस ने दिया हो उस पर इत्राया न करो, और अल्लाह किसी इत्राने और शैखी बघारने वाले को पसन्द नहीं फरमाता।

हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह हमें इस अक़ीदा पर साबित क़दम रखे उस के लाभ तथा प्रतिफल् से मुस्तफीदं फरमाये और अपने अधिक कृपा से नवाज़े और जब उस ने हमें हिदायत् प्रदान की है तो अब हमारे दिलों को हर प्रकार की गुमराही तथा टेढ़ापन से महफूज़ रखे और अपनी तरफ से रह़मत् प्रदान करे कि वह बहुत अधिक प्रदान करने वाला है।

والحمد لله رب العالمين . وصلي الله تعالي علي نبينا محمد وعلي آله واصحابه والتابعين لهم باحسان .

## समाप्त

आप का भाई धर्म सेवक

अबू फैसल/आबिद बिन सनाउल्लाह अल्मद्नी

इस्लामिक् सेन्टर उनेज़ा अल्क़सीम

पोस्ट बाक्स न०–८०८

फोन न०–०६–३६४४५०६/३६५४००४

फाक्स न०–३६१२७९३

सऊदी अरब

# عقيدة أهل السنة والجماعة

## تأليف

## فضيلة الشيخ محمد بن صالح العثيمين
## رحمه الله تعالى

### ترجمه إلى اللغة الهندية

### أبوفيصل/عابدبن ثناء الله المدني

**مكتب دعوة وتوعية الجاليات بعنيزة ص ب ٨٠٨**

**٠٦٣٦٤٤٥٠٦/٠٦ فاكس ٣٦١٣٧٩٣**

مكتب دعوة وتوعية الجاليا ت بعنيزة

هاتف ٠٦٣٦٤٤٥٠٦/٠٦٣٦٥٤٠٠٤ ص ب ٨٠٨

# عقيدة أهل السنة والجماعة

تأليف

فضيلة الشيخ محمد بن صالح العثيمين

رحمه الله تعالى

ترجمه إلى اللغة الهندية

أبو فيصل / عابد بن ثناء الله المدني

•

(باللغة الهندية)

مكتب

دعوة وتوعية الجاليات بعنيزة

هاتف ٠٦٣٦٤٤٥٠٦ ص.ب ٨٠٨

ردمك ٣-٢٢-٨٥٩-٩٩٦٠

مطبعة الترجس التجارية